सितारे

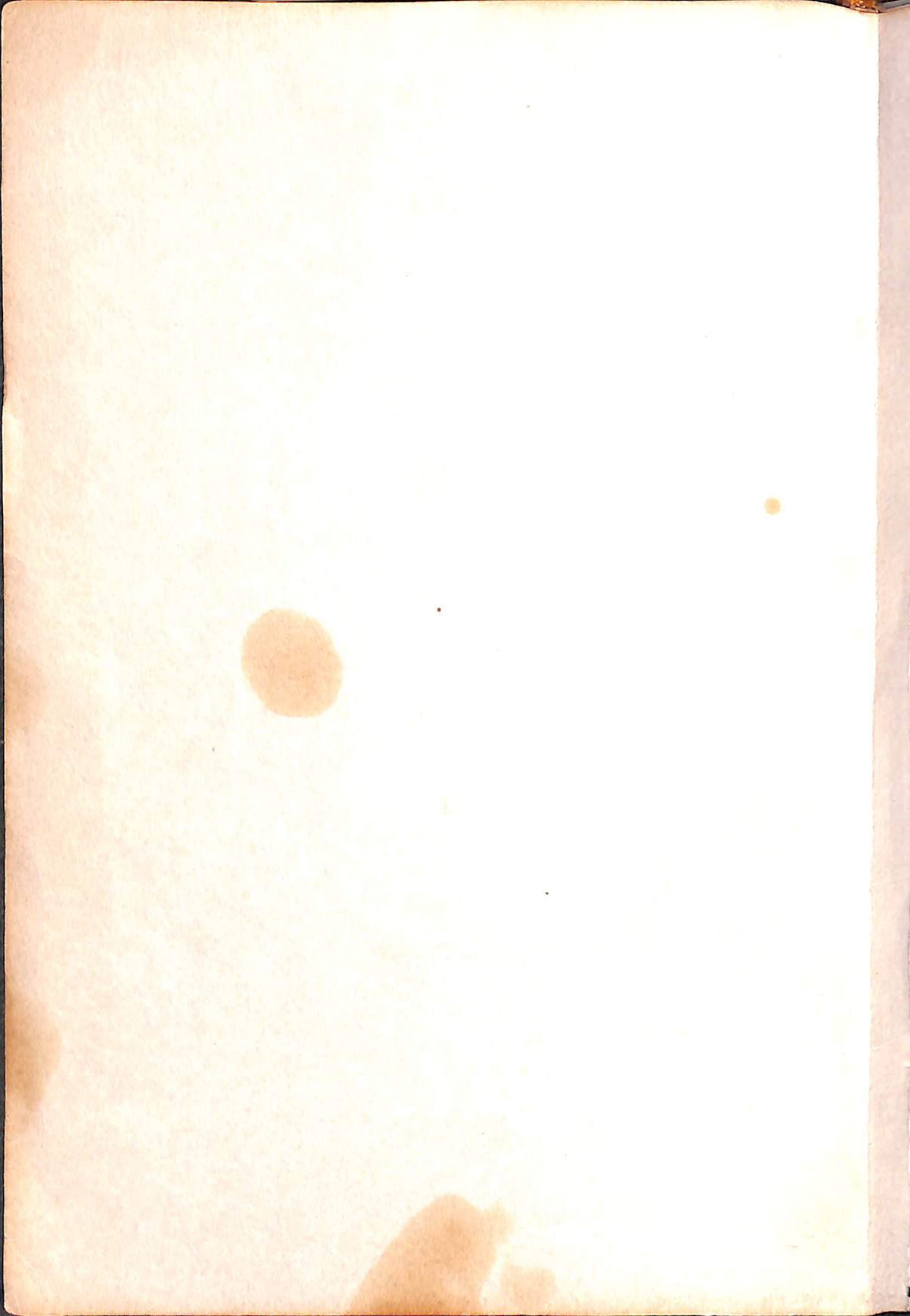
[हिन्दुस्तानी पद्योंका सुन्दर चुनाव]

मेरे लिये तो आज ही वह वक्त है, जब मुझे मेहनतसे दोनों लिपियाँ या लिखावटें सीखनी चाहिये और ऐसी भाषा बोलनी चाहिये जो हिन्दी और उर्दू दोनोंकी ठीक मिलावट हो।

—महात्मा गांधी

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

तीसरी बार : १०००० अप्रैल, १९५२ दाम एक रुपया



सितारे

[हिन्दुस्तानी पद्योंका सुन्दर चुनाव]

मेरे लिये तो आज ही वह वक्त है, जब मुझे मेहनतसे दोनों लिपियाँ या लिखावटें सीखनी चाहिये और ऐसी भाषा बोलनी चाहिये जो हिन्दी और उर्दू दोनोंकी ठीक मिलावट हो।

—महात्मा गांधी

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

तीसरी बार: १०००० अप्रैल, १९५२ दाम एक रुपया

निवेदन

क़रीब तीन साल पहले मैंने कुछ पाठ और कविताओंका संग्रह किया था। अुस संग्रहकी कुछ कविताओंको लेकर श्री. श्रीमन्नारायण अग्रवाल और श्री. घनश्याम 'सीमाब' ने कुछ और कविताअें चुनीं और अिस तरह यह किताब तैयार हुअी।

हि. प्र. सभा, वर्धा की कार्य-समितिके ता. २३-३-४७ के ठहरावके मुताबिक़ यह किताब क़ाबिल परीक्षाके लिये तैयार की गयी है और प्रकाशित की जाती है। जिन कवियोंकी कविताअें अिनमें छपी हैं अुनके हम दिलसे आभारी हैं।

अमृतलाल नाणावटी
मंत्री,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

अक्टूबर, १९४७

***

प्रकाशक :
अमृतलाल ठाकोरदास नाणावटी
मंत्री : हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

मुद्रक :
अ. ठा. नाणावटी
हिन्दुस्तानी छापघर, वर्धा

विषय-सूची

सितारे



खोज

मैं ढूँढ़ता तुझे था जब कुंज और बनमें।
तू खोजता मुझे था तब दीनके वतनमें ॥

तू आह बन किसीकी मुझको पुकारता था।
मैं था तुझे बुलाता संगी में, भजनमें ॥

मेरे लिये खड़ा था दुखियके द्वारपर तू।
मैं बाट जोहता था तेरी किसी चमनमें ॥

बनकर किसीके आँसू मेरे लिये बहा तू।
आँखें लगी थीं मेरी तब मान और धनमें ॥

बाजे बजा-बजाके मैं था तुझे रिझाता।
जब तू लगा हुआ था पतितोंके संगठनमें ॥

मैं था विरक्त तुझसे जगकी अनित्यतापर।
उत्थान भर रहा था तब तू किसी पतनमें ॥

बेबस गिरे हुओंके तू बीचमें खड़ा था।
मैं स्वर्ग देखता था, झुकता कहाँ चरनमें ॥

तूने दिये अनेकों अवसर, न मिल सका मैं।
तू कर्ममें मगन था, मैं व्यस्त था कथनमें ॥

तेरा पता सिकंदरको मैं समझ रहा था ।
पर तू बसा हुआ था फ़रहाद कोहकनमें ॥
क़ीसक़ी हायमें था करता विनोद तू ही ।
तू अंतमें हँसा था महमूदके रुदनमें ॥

प्रह्लाद जानता था तेरा सही ठिकाना ।
तू ही मचल रहा था मंसूरकी रटनमें ॥
आख़िर चमक पड़ा तू गांधीकी हड्डियोंमें ।
मैं था तुझे समझता सुहराब पील-तनमें ॥

कैसे तुझे मिलूँगा जब भेद अिस क़दर है ।
हैरान होके भगवन् आया हूँ मैं सरनमें ॥
तू रूप है किरनमें, सौन्दर्य है सुमनमें ।
तू प्राण है पवनमें, विस्तार है गगनमें ॥

तू ज्ञान हिन्दुओंमें, ओमान मुस्लिमोंमें ।
तूं प्रेम क्रिश्चियनमें, है सत्य तू सुजनमें ॥
हे दीनबन्धु ! अैसी प्रतिभा प्रदान कर तू ।
देखूँ तुझे दृगोंमें, मनमें तथा वचनमें ॥

कठिनाअियों-दुखोंका अितिहास ही सुयश है ।
मुझको समर्थ कर तू बस कष्टके सहनमें ॥
दुखमें न हार मानूँ, सुखमें तुझे न भूलूँ ।
अैसा प्रभाव भर दे मेरे अधीर मनमें ॥



बसो हर वक़्त तुम दिलमें हमारे

बसो हर वक़्त तुम दिलमें हमारे ।
कहीं चाँद और कहीं तुम हो सितारे, निराले हैं तुम्हारे रूप सारे,
हमारी ज़िन्दगीके हो सहारे, बसो हर वक़्त तुम दिलमें हमारे,
बसो हर वक़्त तुम दिलमें हमारे ।
न जाओ रूठकर जमना किनारे, न सूरजमें करो छिपकर अिशारे,
यहीं पूजा तुम्हारी होगी प्यारे, शिवाला है यही क़ाबिल तुम्हारे,
बसो हर वक़्त तुम दिलमें हमारे ।
यह सुन्दर छब्र यह तेवर प्यारे प्यारे, हमारी जान हैं दर्शन तुम्हारे,
न ढूँढ़ो प्रीतिको तुम द्वारे द्वारे, अिसीमें प्रेमके बहते हैं धारे,
बसो हर वक़्त तुम दिलमें हमारे ।



प्यासी नदी

अै बिरादर, पुलपे गंगाके जब आ जाती है रैल ।
फेंकता है किसलिये पैसे, यह क्या करता है खेल ॥
क़ौमकी आँखोंसे जारी हैं लहूकी नद्दियाँ ।
बह रही हैं जिनके अन्दर अिज़्ज़ते-हिन्दोस्ताँ ॥
क्यों नहीं आता है तू अिस ख़ूनकी नद्दीके पास ।
जिसको गंगासे कहीं बढ़चढ़के है दौलतकी प्यास ॥
डूबकर गंगामें अिक पैसा अुभर सकता नहीं ।
हिन्दकी आँखोंसे आँसू ख़ुश्क कर सकता नहीं ॥

कार आमद है जो आवे ज़िन्दगानीकी तरह ।
तू वही दौलत बहा देता है पानीकी तरह ॥

देखकर तेरी यह नादानी—यह कारे नासवाब ।
शर्मके मारे हुअी जाती है गंगा आब आब ॥

बाज़ुअे ज़र नाख़ुदाअीके लिये तैयार हो ।
डूबनेवाली है किश्ती क़ौमकी हुशियार हो ॥

की गयी ना वक़्त क़ुर्बानी तो फिर क्या फ़ायदा ।
सरसे अूँचा हो गया पानी तो फिर क्या फ़ायदा ॥



सुबहकी आमद

ख़बर दिनके आनेकी मैं ला रही हूँ,
अुजाला ज़मानेमें फैला रही हूँ ।

बहार अपनी मशरिक़से दिखला रही हूँ,
पुकारें गले साफ़ चिल्ला रही हूँ ।
अुठो सोनेवालो क मैं आ रही हूँ ॥

मैं सब कार-व्योहारके साथ आयी,
मैं रफ़्तार-गुफ़्तारके साथ आयी ॥

मैं बाजोंकी झनकारके साथ आयी,
मैं चिड़ियोंकी चहकारके साथ आयी ॥ अुठो०

अज़ाँपर अज़ाँ मुर्ग़ देने लगा है,

ख़ुशीसे हरअिक जानवर बोलता है ।

दरख़्तोंके अूपर अजब चहचहा है,

सुहाना है वक़्त और ठण्डी हवा है ॥ अुठो०

ये चिड़ियाँ जो पेड़ोंपे हैं गुल मचाती,

अिधरसे अुधर अुड़के हैं आती-जाती ।

दुमोंको हिलाती परोंको फुलाती,

मिरी आमद आमदके हैं गीत गाती ॥ अुठो०

जो तोतोंने बाग़ोंमें टें टें मचाअी,

तो बुलबुल भी गुलशनमें है चहचहाअी ।

और अूँची मुँडेरोंपे शामा भी गाअी,

मैं सौ सौ तरह दे रही हूँ दुहाअी ॥ अुठो०

हरअिक बाग़को मैंने महका दिया है,

नसीमे सबाको भी लहका दिया है ।

चमन सुर्ख़ फूलोंसे दहका दिया है,

मगर नींदने तुमको बहका दिया है ॥ अुठो०

हुअी मुझसे रौनक़ पहाड़ और बनमें,

हरअिक मुल्कमें, देसमें और वतनमें ।

खिलाती हुअी फूल आअी चमनमें,

बुझाती चली शमा नौ अंजुमनमें ॥ अुठो०

जो अिस वक़्त जंगलकी बूटी जड़ी है,
सो वह नौलखा हार पहने खड़ी है।
अजब यह समाँ है अजब यह घड़ी है,
कि पिछलेकी ठण्डकसे शबनम पड़ी है ।। अुठो०

हिरन चौंककर चौकड़ी भर रहे हैं,
कुलेलें हरअिक खेतमें कर रहे हैं ।
नदीके किनारे खड़े चर रहे हैं,
ग़रज़ मेरे जलवेपै सब मर रहे हैं ।। अुठो०

मैं तारोंकी छाँ आन पहुँची यहाँतक,
ज़मींसे है जलवा मिरा आस्माँतक ।
मुझे पाओगे देखते हो जहाँतक,
करोगे भला काहिली तुम कहाँतक ।। अुठो०

पुजारीको मन्दिरके मैंने जगाया,
मुअज़्ज़िनको मस्जिदमें मैंने अुठाया ।
भटकते मुसाफ़िरको रस्ता बताया,
अन्धेरा घटाया अुजाला बढ़ाया ।। अुठो०

लदे क़ाफ़िलोंके भी मंज़िलसे डेरे,
किसानोंके हल चल पड़े मुँह-अँधेरे ।
चले जाल कन्धोंपै लेके मछेरे,
दलिद्दर हुअे दूर आनेसे मेरे ।। अुठो०

को हुशियार हो जाओ और आँख खोलो,
न लो करवटें और न बिस्तर टटोलो।
खुदाको करो याद और मुँहसे बोलो,
बस अब खैरसे अुठके मुँह-हाथ धो लो ॥
अुठो सोनेवालो कि मैं आ रही हूँ ॥

★

चूरन

चूरन अमल बेदका भारी। जिसको खाते कृष्ण मुरारी।
मेरा पाचक है पचलोना। जिसको खाता श्याम सलोना।
चूरन बना मसालेदार। जिसमें खट्टेकी बहार।
मेरा चूरन जो कोअी खाय। मुझको छोड़ कहीं नहीं जाय।
हिन्दू चूरन अिसका नाम। विलायत पूरन अिसका काम।
चूरन जबसे हिन्दमें आया। अिसका धन बल सभी घटाया।
चूरन अैसा हट्टा-कट्टा। कीना दाँत सभीका खट्टा।
चूरन अमले सब जो खावें। दूनी रिश्वत तुरत पचावें।
चूरन नाटकवाले खाते। अिसकी नकल पचाकर लाते।
चूरन सभी महाजन खाते। जिससे जमा हज़म कर जाते।
चूरन खाते लाला लोग। जिनको अकिल अजीरन रोग।
चूरन खावें अेडिटर जात। जिनके पेट पचै नहिं बात।

चूरन साहेब लोग जो खाता। सारा हिन्द हज़म कर जाता।
चूरन पूलिसवाले खाते। सब क़ानून हज़म कर जाते।
ले चूरनका ढेर। बेचा टके सेर।

★

श्रीकृष्णकी बाल-लीला

यारो सुनो ये 'दधिके लुटैया' का बालपन।
औ मधुपुरी नगरके बसैयाका बालपन॥
मोहन सरूप नृत्य करैयाका बालपन।
बन-बनके ग्वाल गौवें चरैयाका बालपन॥
ऐसा था बाँसुरीके बजैयाका बालपन।
क्या क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैयाका बालपन॥१॥
ज़ाहिरमें सुत वो नन्द-जसोदाके आप थे।
वरना वो आपी माई थे और आपी बाप थे॥
परदेमें बालकपनके ये उनके मिलाप थे।
जोती-सरूप कहिये जिन्हें सो वो आप थे॥
ऐसा था बाँसुरीके बजैयाका बालपन।
क्या क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैयाका बालपन॥२॥
उनको तो बालपनसे न था काम कुछ ज़रा।
संसारकी जो रीति थी उसको रखा बजा॥

मालिक थे वह तो आपी अुन्हें बालपनसे क्या ।
वाँ बालपन जवानी बुढ़ापा सब अेक था ॥
अैसा था बाँसुरीके बजैयाका बालपन ।
क्या क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैयाका बालपन ॥ ३ ॥

बाले हो बिर्जराज जो दुनियाँमें आ गये ।
लीलाके लाख रंग तमाशे दिखा गये ॥
अिस बालपनके रूपमें कितनोंको भा गये ।
अेक यह भी लहर थी जो जहाँको जता गये ॥
अैसा था बाँसुरीके बजैयाका बालपन ।
क्या क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैयाका बालपन ॥४॥

सब मिलके यारो कृष्णमुरारीकी बोलो जै ।
गोविन्द छैल कुञ्जबिहारीकी बोलो जै ॥
दधि चोर गोपीनाथ बिहारीकी बोलो जै ।
तुम भी नज़ीर कृष्णमुरारीकी बोलो जै ॥
अैसा था बाँसुरीके बजैयाका बालपन ।
क्या क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैयाका बालपन ॥५॥

***

होली

मान अपना बचाओ, सम्हलकर पाँव अुठाओ,
गाओ भाव भरे गीतोंको, बाजे अुमग बजाओ,
तानें ले ले रस बरसाओ, पर ताने न सहाओ,
भूल अपनेको न जाओ ॥१॥

बात हँसीकी मरजादासे कहकर हँसो-हँसाओ,
पर अपनेको बात बुरी कह आँखोंसे न गिराओ,
हँसी अपनी न कराओ ॥२॥

खेलो रंग अबीर अुड़ाओ लाल गुलाल लगाओ,
पर अति सुरंग लाल चादरको मत बदरंग बनाओ,
न अपना रंग गँवाओ ॥३॥

जन्म-भूमिकी रजको लेकर सिरपर ललक चढ़ाओ,
पर अपने अूँचे भावोंको मिट्टीमें न मिलाओ,
न अपनी धूल अुड़ाओ ॥४॥

प्यार अुमंग-रंगमें भीगो सुन्दर फाग मचाओ,
मिल-जुल जीकी गाँठें खोलो हितकी गाँठ बँधाओ,
प्रीतिकी बेलि अुगाओ ॥५॥

***

कर्मवीर

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं ।
रह भरोसे भागके दुख भोग पछताते नहीं ॥
काम कितना ही कठिन हो किन्तु अुकताते नहीं ।
भीड़में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं ॥
हो गये यक आनमें अुनके बुरे दिन भी भले ।
सब जगह सब कालमें वे ही खिले फूले फले ॥१॥

आज करना है जिसे करते अुसे हैं आज ही।
सोचते, कहते हैं जो कुछ कर दिखाते हैं वही ॥
मानते जीकी हैं सुनते हैं सदा सबकी कही।
जो मदद करते हैं अपनी अिस जगतमें आप ही ॥
भूलकर वे दूसरोंका मुँह कभी तकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं ॥२॥
जो कभी अपने समयको यों बिताते हैं नहीं ॥
काम करनेकी जगह बातें बनाते हैं नहीं।
आजकल करते हुअे जो दिन गँवाते हैं नहीं।
यत्न करनेमें कभी जो जी चुराते हैं नहीं ॥
बात है वह कौन जो होती नहीं अुनके किये।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरोंके लिये ॥३॥

*
**

क़ौमका हमदर्द

है कोअी अपनी क़ौमका हमदर्द।
नूअ अिन्साँका जिसको समझे फ़र्द ॥
जिसपे अितलाक़ आदमी हो सहीह।
जिसको हैवाँपे दे सकें तर्जीह ॥
क़ौमपे कोअी ज़द न देख सके।
क़ौमका हाले बद न देख सके ॥

कौमसे जान तक अज़ीज़ न हो ।
कौमसे बढ़के कोअी चीज़ न हो ॥

समझे अुनकी ख़ुशीको राहते जाँ ।
वहाँ जो नौरोज़ हो तो अीद हो याँ ॥

रंजको अुनके समझे मायये ग़म ।
वाँ अगर सोग हो तो याँ मातम ॥

भूल जाये सब अपनी क़द्रे जलील ।
देखकर भाअियोंको ख़्वारो ज़लील ॥

जब पड़े अुनपै गर्दिशे-अफ़लाक ।
अपनी आसायशों पै डाल दे ख़ाक ॥

बैठे बेफ़िक्र क्या हो हमवतनो ।
अुठो अहले वतनके दोस्त बनो ॥

मर्द हो तो किसीके काम आओ ।
वर्ना खाओ पिओ चले जाओ ॥

जागनेवाको ग़ाफ़िलोंको जगाओ ।
तैरनेवाको डूबतोंको तिराओ ॥

तुम अगर हाथ-पाँव रखते हो ।
लँगड़े-लूलोंको कुछ सहारा दो ॥

तन्दुरुस्तीका शुक्र क्या है बताओ ।
रंज बीमार भाअियोंका बँटाओ ॥

तुम अगर चाहते हो मुल्ककी ख़ैर ।
न किसी हमवतनको समझो ग़ैर ॥

हो मुसलमान अिसमें या हिन्दू ।
बौध मज़हब हो या कि हो ब्रह्मू ॥

सबको मीठी निगाहसे देखो ।
समझो आँखोंकी पुतलियाँ सबको ॥

⁂

मेहनत

खपाते हैं कोशिशमें ताबो तवाँको ।
घुलाते हैं मेहनतमें जिस्मो रवाँको ॥

समझते नहीं अिसमें जाँ अपनी जाँको ।
वह मर मरके रखते हैं ज़िन्दा जहाँको ॥

बस अिस तरह जीना अिबादत है अुनकी ।
और अिस धुनमें मरना शहादत है अुनकी ॥

⁂

आप अपना सहारा

बशरको है लाज़िम कि हिम्मत न हारे ।
जहाँ तक हो काम आप अपने सँवारे ॥

ख़ुदाके सिवा छोड़ दे सब सहारे ।
कि हैं आरज़ी ज़ोर, कमज़ोर सारे ॥

अड़े वक्त तुम दायें बायें न झाँको ।
सदा अपनी गाड़ीको गर आप हाँको ॥

***

रूबाअी

मुमकिन ये नहीं कि हो बशर अैबसे दूर ।
पर अैबसे बचिये ता ब मक़दूर ज़रूर ॥
अैब अपने घटाओ पै ख़बरदार रहो ।
घटनेसे कहीं अुनके न बढ़ जाये ग़रूर ॥

मूसाने यही की अर्ज़ कि अै बारे ख़ुदा !
मक़बूल तेरा कौन है बन्दोंमें सिवा ॥
अिरशाद हुआ बन्दा हमारा वह है ।
जो ले सके और न ले बदीका बदला ॥

***

हमारा झण्डा

शेर क्या चलते हैं दर्राते हुअे,
बादलोंकी तरह मण्डलाते हुअे,
ज़िन्दगीकी रागिनी गाते हुअे,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥१॥
हाँ यह सच है भूखसे हैरान हैं,
पर यह मत समझो कि हम बेजान हैं,

अिस बुरी हालत में भी तूफ़ान हैं,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥२॥

हम वह हैं जो बेरूखी करते नहीं,
हम वह हैं जो मौतसे डरते नहीं,
हम वह हैं जो मरके भी मरते नहीं,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥३॥

चैनसे महलोंमें हम रहते नहीं,
अैशकी गंगामें हम बहते नहीं,
भेद दुश्मनोंसे कभी कहते नहीं,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥४॥

जानते हैं अेक लश्कर आगया,
तोप दिखलाकर हमें धमकायेगा,
पर यह झण्डा भी यों ही लहरायेगा,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥५॥

कब भला धमकीसे घबराते हैं हम,
दिलमें जो होता है कह जाते हैं हम,
आस्माँ हिलता है जब गाते हैं हम,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥६॥

लाख लश्कर आये कब हिलते हैं हम,
आँधियोंमें जंगकी खिलते हैं हम,
मौतसे हँसकर गले मिलते हैं हम,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥७॥

अड़े वक्त तुम दायें बायें न झाँको ।
सदा अपनी गाड़ीको गर आप हाँको ॥

***

रूबाअी

मुमकिन ये नहीं कि हो बशर अैबसे दूर ।
पर अैबसे बचिये ता ब मक़्दूर ज़रूर ॥
अैब अपने घटाओ पै ख़बरदार रहो ।
घटनेसे कहीं अुनके न बढ़ जाये ग़रूर ॥

मूसाने यही की अर्ज़ कि अै बारे ख़ुदा !
मक़बूल तेरा कौन है बन्दोंमें सिवा ॥
अिरशाद हुआ बन्दा हमारा वह है ।
जो ले सके और न ले बदीका बदला ॥

***

हमारा झण्डा

शेर क्या चलते हैं दर्राते हुअे,
बादलोंकी तरह मण्डलाते हुअे,
ज़िन्दगीकी रागिनी गाते हुअे,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥१॥
हाँ यह सच है भूखसे हैरान हैं,
पर यह मत समझो कि हम बेजान हैं,

अिस बुरी हालत में मी तूफ़ान हैं,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥२॥

हम वह हैं जो बेरूखी करते नहीं,
हम वह हैं जो मौतसे डरते नहीं,
हम वह हैं जो मरके भी मरते नहीं,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥३॥

चैनसे महलोंमें हम रहते नहीं,
अैशकी गंगामें हम बहते नहीं,
भेद दुश्मनोंसे कभी कहते नहीं,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥४॥

जानते हैं अेक लश्कर आगया,
तोप दिखलाकर हमें धमकायेगा,
पर यह झण्डा भी यों ही लहरायेगा,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥५॥

कब भला धमकीसे घबराते हैं हम,
दिलमें जो होता है कह जाते हैं हम,
आस्माँ हिलता है जब गाते हैं हम,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥६॥

लाख लश्कर आये कब हिलते हैं हम,
आँधियोंमें जंगकी खिलते हैं हम,
मौतसे हँसकर गले मिलते हैं हम,
आज है झण्डा हमारे हाथमें ॥७॥

मेरे वतनको तूने जन्नत बना दिया है

(१)

यह आस्माँ बनाया, सारा जहाँ बनाया।
हिन्दोस्ताँ बनाया, सारा जहाँ बनाया।
क्या शुक्र हो अिलाही सब कुछ अता किया है।
मेरे वतनको तूने जन्नत बना दिया है॥

(२)

कानोंको भर दिया है, मिट्टीमें ज़र दिया है।
अकसीर कर दिया है, क्या प्यारा घर दिया है।
क्या शुक्र हो अिलाही सब कुछ अता किया है।
मेरे वतनको तूने जन्नत बना दिया है॥

(३)

बरसात आ रही है, झूला झुला रही है।
कलियाँ खिला रही है, दिलको लुभा रही है।
क्या शुक्र हो अिलाही सब कुछ अता किया है।
मेरे वतनको तूने जन्नत बना दिया है॥

(४)

परबत जो अेक याँ है, हमदोश आस्माँ है।
कैसा अजब समाँ है, अैसी ज़मीं कहाँ है।
क्या शुक्र हो अिलाही सब कुछ अता किया है।
मेरे वतनको तूने जन्नत बना दिया है॥

(५)

यह फ़ूसकी कुटी है, 'अफ़सर' की झोंपड़ी है।
किस दर्जा सादगी है, राहतकी ज़िन्दगी है।
क्या शुक्र हो अिलाही सब कुछ अता किया है।
मेरे वतनको तूने जन्नत बना दिया है॥

***

ख़ाके हिन्द

अै ख़ाके हिन्द तेरी अज़मतमें क्या गुमाँ है।
दरयाये फ़ैज़े कुदरत तेरे लिये रवाँ है॥
तेरी जबीं से नूरे हुस्ने अज़ल अयाँ है।
अल्लाह रे ज़ेबो ज़ीनत क्या औज अिज़्ज़ोशाँ है॥
हर सुब्ह है यह ख़िदमत ख़ुरशीद पुर ज़याकी।
किरनोंसे गूँधता है चोटी हिमालियाकी॥

* * *

गौतमने आबरू दी अिस वादिये कोहन को।
सरमदने अिस ज़मीं पर सदक़े किया वतनको॥
अकबरने जामे अुल्फ़त बख़्शा अिस अंजुमनको॥
सींचा लहू से अपने राना ने अिस चमनको॥
सब सूर बीर अपने अिस ख़ाक में निहाँ हैं।
टूटे हुअे खंडर हैं या अुनकी हड्डियाँ हैं॥

* * *

कशमीरसे अयाँ है जन्नतका रंग अब तक ।
शौकतसे बह रहा है दरयाये गंग अब तक ॥
अगली सी ताज़गी है फूलोंमें और फलोंमें !
करते हैं रक़्स अब तक ताऊस जंगलोंमें ॥

* * *

बुलबुलको गुल मुबारक, गुलको चमन मुबारक ।
हम बेकसोंको अपना प्यारा वतन मुबारक ॥
गुंचे हमारे दिलके अिस बाग़में खिलेंगे ।
अिस बाग़से अुठे हैं अिस बाग़में मिलेंगे ॥

* * *

है जूये शीर हमको नूरे सहेर वतनका ।
आँखोंकी रौशनी है जल्वा अिस अंजुमनका ॥
है रश्क मह ज़र्रा अिस मंज़िले कोहनका ।
तुलना है बर्गे गुलसे काँटा भी अिस चमनका ॥
गर्दो गुबार याँका ख़िलअत है अपने तनको ।
मरकर भी चाहते हैं ख़ाके वतन कफ़न को ॥

***

क़ौमकी लड़कियोंसे

रविशे ख़ाम पे मदाकी न जाना हरगिज़ ।
दाग़ तालीममें अपनी न लगाना हरगिज़ ॥

नाम रक्खा है तुमाअिशका तरक्क़ी व रिफ़ार्म ।
तुम अिस अंदाज़के धोखेमें न आना हरगिज़ ॥

रंग है जिनमें मगर बूअे वफ़ा कुछ भी नहीं ।
अैसे फूलोंसे न घर अपना सजाना हरगिज़ ॥

नक़्ल योरपकी मुनासिब है मगर याद रहे ।
ख़ाकमें ग़ैरते क़ौमी न मिलाना हरगिज़ ॥

ख़ुद जो करते हैं ज़मानेकी रविशको बदनाम ।
साथ देता नहीं अैसोंका ज़माना हरगिज़ ॥

ख़ुद-परस्तीको लक़ब देते हैं आज़ादीका ।
अैसे अख़लाक़ पै ईमान न लाना हरगिज़ ॥

रंगो रौग़न तुम्हें योरपका मुबारक लेकिन ।
क़ौमका नक़्श न चेहरेसे मिटाना हरगिज़ ॥

जो बनाते हैं तुमाअिशका खिलौना तुमको ।
अुनकी ख़ातिरसे यह ज़िल्लत न अुठाना हरगिज़ ॥

रुख़से परदेको अुठाया तो बहुत ख़ूब किया ।
परदअे शरमको दिलसे न अुठाना हरगिज़ ॥

तुमको क़ुदरतने जो बख़्शा है हयाका ज़ेवर ।
मोल अुसका नहीं क़ारूँका ख़ज़ाना हरगिज़ ॥

दिल तुम्हारा है वफ़ाओंकी परस्तिशके लिये ।
अुस मुहब्बतके शिवालयको न ढाना हरगिज़ ॥

पूजनेके लिये मन्दिर जो है आज़ादीका ।
अुसको तफ़रीहका मरकज़ न बनाना हरगिज़ ॥
नक़द अख़लाक़का हम नलकी तरह हार चुके ।
तुम हो दमयन्ती यह दौलत न लुटाना हरगिज़ ॥
ख़ाकमें दफ़न है मज़हबके पुराने पाखंड ।
तुम यह सोते हुअे फ़ितने न जगाना हरगिज़ ॥
अपने बच्चोंकी ख़बर क़ौमके मर्दोंको नहीं ।
यह हैं मासूम अिन्हें भूल न जाना हरगिज़ ॥
अुनकी तालीमका मकतब है तुम्हारा ज़ानू ।
पास मर्दोंके नहीं अुनका ठिकाना हरगिज़ ॥
काग़ज़ी फूल विलायतके दिखाकर अुनको ।
देशके बाग़से नफ़रत न दिलाना हरगिज़ ॥
नग़मअे क़ौमकी लय जिसमें समा ही न सके ।
राग अैसा कोअी अुनको न सिखाना हरगिज़ ॥
परवरिश क़ौमकी दामनमें तुम्हारे होगी ।
याद अिस फ़र्ज़की दिलसे न भुलाना हरगिज़ ॥
गो बुज़ुर्गोंमें तुम्हारे न हो अिस वक़्तका रंग ।
अुन ज़अीफ़ोंको न हँस-हँसके रुलाना हरगिज़ ॥
होगा परलय जो गिरा आँखसे अिनकी आँसू ।
बचपने-से न यह तूफ़ान अुठाना हरगिज़ ॥

हम तुम्हें भूल गये अिसकी सज़ा पाते हैं।
तुम ज़रा अपने तअीं भूल न जाना हरगिज़ ॥
किसके दिलमें है वफ़ा किसकी ज़बाँमें तासीर।
न सुना है न सुनोगी यह फ़साना हरगिज़ ॥

***

वतन

यह प्यारी अंजुमन हमको मुबारक,
यह अुल्फ़तका चमन हमको मुबारक,
वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥
यहाँकी ख़ाक हमको कीमिया है,
यह सोनेसे भी क़ीमतमें सिवा है,
वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥
जो चिड़ियाँ सुबहको गाती हैं अकसर,
अिसीका राग है अुनकी ज़बाँ पर,
वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥
वह सावनके महीनेकी घटायें,
वह कोयल और पपीहेकी सदायें,
वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥
वह अिक मस्तीका आलम बादलोंमें,
वह फूलोंका महकना जंगलोंमें,
वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥

वह चश्मे और वह अमृत-सा पानी,
वह गंगा और जमनाकी रवानी,
वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥

दरख़्तों पर वह चिड़ियोंका चहकना,
वह बेले और चमेलीका महकना,
वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥

अिसीकी ख़ाकसे लेते हैं महसूल,
यही देता है ग़ल्ला और फलफूल,
वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥

वतनका जिन बुज़ुर्गोंसे हुआ नाम,
अिसी मिट्टीमें वह करते हैं आराम,
वतनको हम, वतन हमको मुबारक ॥

***

मज़दूर

अै दौलतोज़रवालो, अै जाहोहश्मवालो,
अै लालो गौहरवालो, अै ताजोझंडेवालो,
सोचा है कभी तुमने वह वक़्त भी क्या होगा,
मज़दूरकी शोरिशसे जब हश्र बपा होगा ॥

लुट जायेगी रंगीनी, गुलज़ार मुसरर्तकी,
गिर जायेंगी दीवारें, अीवाने हुकूमतकी,

काशानये अिशरतमें कुहराम मचा होगा,
मज़दूरकी शोरिशसे जब हश्र बपा होगा !
मज़दूरका खूँ सदियों, जी भरके पिया तुमने,
अिन्सानकी जन्नतको, बरबाद किया तुमने,
अै ताज अलमवालो, क्या जानिये क्या होगा,
मज़दूरकी शोरिशसे जब हश्र बपा होगा ॥
है सोगमें अिक दुनिया, तुम अैश मनाते हो,
है आग लगी घरमें, तुम नाचते गाते हो,
अै अैशके मतवालो अंजाम बुरा होगा,
मज़दूरकी शोरिशसे जब हश्र बपा होगा ॥

***

रोटीके मतवाले

हम तो रोटीके मतवाले !
नहीं चाह मदिराकी साकी क्या होंगे ये प्याले !
सुरापान कर जीवनके दुख नहीं भुलाना हमको,
हम तो दुखजीवनके प्रेमी, गावें राग निराले !
विस्मृतिके सागरमें बहना, हम अति तुच्छ समझते,
कंटकमय जीवनपथ चलते, पड़े पदोंमें छाले,
अिन काँटोंकी पीर जगानेको आते हम रोटी,
पाकर जीवनदान अुसीमें हो जाते मतवाले !

***

खूब बरस लो

ख़ूब बरस लो तुम भी आज ।

यह आँखें तो सदा बरसतीं, तुम भी ख़ूब बरस लो आज,
अिस छोटीसी सड़ी झोंपड़ामें, जलधर क्या पाओगे ?
सभी ओर तुम टपक टपककर जल ही व्यर्थ गँवाओगे !
तुम बरसो, मैं भी बैठा हूँ, होगा नहीं किसीका काज,
ख़ूब बरस लो तुम भी आज ।

लूट लिया सब दरिद्रताने, गया लाल भी पिछले साल,
रखता है क्या कोअी आशा, अब यह फूटा हुआ कपाल
कौन नये अंकुर अुपजाते, आये हो जो सजकर साज ?
शान्त रात्रिके अिस क्षणमें, क्या तुम्हें पड़ी थी आनेकी,
दिनभर मैं श्रम कर सोया था, क्या यह घड़ी जगानेकी ?
सुनने आये हो कि सुनाने, मेरा अपना टप-टप बाज ?

***

जय बोलो भारत माताकी

दुख सागरमें यह बहती है, रोज़ अेक मुसीबत सहती है,
चिन्तामें हमेशा रहती है, यूँ दिलकी कहानी कहती है ॥
दिनरात तड़प कर रोती है, अश्कोंसे यह दामन धोती है,
सुख नींद कहाँ यह सोती है, बेचैन हमेशा होती है ॥

दुख दर्द मुसीबत है ग़म है, आँखोंमें रुका आ कर दम है,
हर साँस पर अपना मातम है, अफ़सोस ग़ज़बका आलम है ॥
दिनरात मचलते रहती है, करवट यह बदलती रहती है,
रह रहके सँभलती रहती है, किस आगमें जलती रहती है ॥
दुनियाने अिसे क्या समझा है, अेक खेल तमाशा समझा है,
समझा है यह अच्छा समझा है, क्या राहका तिनका समझा है ॥
संसार फुँकेगा आहोंसे, बदला लेगी यह शाहोंसे,
गुज़रेगी कुछ अैसी राहोंसे, खटका ही नहीं बदख्वाहोंका ॥
दुनियाको हिला देगी अुठकर, दुनियाको दिखा देगी अुठकर,
दुनियाको जता देगी अुठकर, दुनियाको बता देगी अुठकर ॥
संकटसे न यह घबरायेगी, झण्डा अपना लहरायेगी,
क्या चीज़ है यह समझायेगी, दुनियामें नाम कमायेगी ॥
ज़ंजीरें गुलामी तोड़ेगी, अेक अेकसे नाता जोड़ेगी,
रंग अपना जमाकर छोड़ेगी, अिससे न कमी मुँह मोड़ेगी ॥
आज़ादीकी दीवानी है, यह बात तो समझी जानी है,
खाक अिसने बहुत कुछ छानी है, मशहूर जहाँ कुरबानी है ॥
अेक अेकका सर अब ख़म होगा, दुनियाका कहाँ कब ग़म होगा,
और अपना नया आलम होगा, 'बिस्मिल' का तड़पना कम होगा ॥

*

झाँसीकी रानी

सिंहासन हिल अुठे, राजवंशोंने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारतमें भी आअी फिरसे नअी जवानी थी,
गुमी हुअी आज़ादीकी क़ीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगीको करनेकी सबने मनमें ठानी थी,

चमक अुठी सन् सत्तावनमें वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी।
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थी॥

कानपूरके नानाकी मुँहबोली बहिन छबीली थी,
लक्ष्मीबाअी नाम पिताकी वह सन्तान अकेली थी,
नानाके संग पढ़ती थी वह नानाके संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी, अुसकी यही सहेली थी,

वीर शिवाजीकी गाथाअें अुसको याद ज़बानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी॥ख़ूब लड़ी०

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरताकी अवतार,
देख मराठे पुलकित होते अुसकी तलवारोंके वार,
नकली युद्ध व्यूहकी रचना और खेलना ख़ूब शिकार,
सैन्य घेरना दुर्ग तोड़ना ये थे अुसके प्रिय खिलवार,

महाराष्ट्र-कुल-देवी अुसकी भी आराध्य भवानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी॥ख़ूब लड़ी०

हुअी वीरताकी वैभवके साथ सगाअी झाँसीमें,
ब्याह हुआ रानी बन आअी लक्ष्मीबाअी झाँसीमें,
राजमहलमें बजी बधाअी ख़ुशियाँ छाअीं झाँसीमें,
सुभट बुन्देलोंकी विरुदावलि-सी वह आअी झाँसीमें,
चित्राने अर्जुनको पाया शिवसे मिली भवानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी ॥ख़ूब लड़ी०

अुदित हुआ सौभाग्य! मुदित महलोंमें अुजियाली छाअी,
किन्तु काल-गति चुपके चुपके काली घटा घेर लाअी,
तीर चलानेवाले करमें अुसे चूड़ियाँ कब भाअीं,
रानी विधवा हुअी हाय! विधिको भी नहीं दया आअी,
निःसन्तान मरे राजाजी रानी शोक समानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी ॥ख़ूब लड़ी०

बुझा दीप झाँसीका तब डलहौज़ी मनमें हरषाया,
राज्य हड़प करनेका अुसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन् फ़ौजें भेज दुर्गपर अपना झण्डा फहराया,
लावारिसका वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,
अश्रु-पूर्ण रानीने देखा झाँसी हुअी बिरानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी ॥ख़ूब लड़ी०

अनुनय-विनय नहीं सुनता है, विकट शासकोंकी माया,
व्यापारी बन दया चाहता था यह जब भारत आया,

डलहौज़ीने पैर पसारे अब तो पलट गयी काया,
राजाओं, नव्वाबोंको भी अुसने पैरों ठुकराया,

रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महारानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी॥ ख़ूब लड़ी०

छिनी राजधानी देहलीकी लखनअू छीना बातों बात,
कैद पेशवा था बिठूरमें हुआ नागपुरका भी घात,
अुदयपूर, तंजौर, सतारा, करनाटककी कौन बिसात,
जब कि सिंध, पंजाब, ब्रह्मपर अभी हुआ था वज्राघात,

बंगाले, मद्रास आदिकी भी तो वही कहानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी॥ ख़ूब लड़ी०

रानी रोअीं रनिवासोंमें बेगम ग़मसे थीं बेज़ार,
अुनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्तेके बाज़ार,
सरे आम नीलाम छापते थे अँग्रेज़ोंके अख़बार,
'नागपूरके ज़ेवर ले लो' 'लखनअूके लो नौलख हार'

यों परदेकी अिज़्ज़त परदेशीके हाथ बिकानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी॥ ख़ूब लड़ी०

कुटियोंमें थी विषम वेदना महलोंमें आहत अपमान,
वीर सैनिकोंके मनमें था अपने पुरखोंका अभिमान,
नाना धुन्दूपन्त पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीलीने-रणचण्डीका कर दिया प्रकट आह्वान,

हुआ यज्ञ प्रारम्भ अुन्हें तो सोअी ज्योति जगानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी॥ ख़ूब लड़ी०

महलोंने दी आग, झोंपड़ीने ज्वाला सुलगायी थी,
यह स्वतंत्रताकी चिनगारी अन्तरतमसे आयी थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनअू लपटें छायी थीं,
मेरठ, कानपूर, पटनाने भारी धूम मचाओ थी,

जबलपूर, कोल्हापुरमें भी कुछ हलचल अुकसानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी॥ खूब लड़ी०

अिस स्वतंत्रता-महायज्ञमें कअी वीरवर आये काम,
नाना, धुन्धूपन्त, तातिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह, सैनिक अभिराम,
भारतके अितिहास गगनमें अमर रहेंगे जिनके नाम,

लेकिन आज जुर्म कहलाती अुनकी जो कुर्बानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी॥ खूब लड़ी०

अिनकी गाथा छोड़ चलें हम झाँसीके मैदानोंमें,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाअी मर्द बनी मर्दानोंमें,
लेफ्टिनेन्ट वौकर आ पहुँचा आगे बढ़ा जवानोंमें,
रानीने तलवार खींच ली हुआ द्वन्द्व असमानोंमें,

ज़ख्मी होकर वौकर भागा अजब अुसे हैरानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी॥ खूब लड़ी०

रानी बढ़ी कालपी आयी कर सौ मील निरन्तर पार,
घोड़ा थककर गिरा भूमिपर गया स्वर्ग तत्काल सिधार,

यमुना-तटपर अँग्रेज़ोंने फिर खायी रानीसे हार,
विजयी रानी आगे चल दी किया ग्वालियरपर अधिकार,

अँग्रेज़ोंके मित्र सिंधियाने छोड़ी राजधानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी॥ ख़ूब लड़ी०

विजय मिली, पर अँग्रेज़ोंकी फिर सेना घिर आयी थी,
अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था असने मुँहकी खायी थी,
काना और मंदिरा सखियाँ रानीके संग आयी थी,
युद्ध-क्षेत्रमें अुन दोनोंने भारी मार मचाअी थी,

पर पीछे ह्यूरीज़ आ गया हाय! घिरी अब रानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी॥ ख़ूब लड़ी०

तो भी रानी मार काटकर चलती बनी सैनके पार,
किन्तु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, अितनेमें आ गये सवार,
रानी अेक शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार-पर-वार,

घायल होकर गिरी सिंहनी अुसे वीर गति पानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी॥ ख़ूब लड़ी०

रानी गयी सिधार! चिता अब अुनकी दिव्य सँवारी थी,
मिला तेज-से-तेज, तेजकी वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी अुम्र कुल तेअीसकी थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी बन स्वतंत्रता नारी थी,

दिखा गयी पथ, सिखा गयी हमको जो सीख सिखानी थी।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी॥ ख़ूब लड़ी०

जाओ रानी, याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी,
होवे चुप अितिहास, लगे सच्चाअीको चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय मिटा दे गोलोंसे चाहे झाँसी,

तेरा स्मारक तू ही होगी, तू ख़ुद अमिट निशानी है।
बुन्देले हरबोलोंके मुख हमने सुनी कहानी थी। ख़ूब लड़ी०

***

बरखा

कल शामतलक तो थे यही तौर।
पर रातसे है समाँ ही कुछ और ॥१॥

पुरवाकी दुहाअी फिर रही है।
पछवासे ख़ुदाअी फिर रही है ॥२॥

बरसातका बज रहा है डंका।
अेक शोर है आस्माँपे बरपा ॥३॥

है अब्रकी फ़ौज आगे आगे।
और पीछे हैं दल-के-दल हवाके ॥४॥

रंग बिरंगके रिसाले।
गोरे हैं कहीं कहीं हैं काले ॥५॥

है चर्ख़पे छावनी-सी छाती।
अेक आती है फ़ौज अेक जाती ॥६॥

जाते हैं मुहिमपे कोओी जाने ।
हमराह हैं लाखों तोपख़ाने ॥७॥

तोपोंकी है जब बाढ़ चलती ।
छाती है ज़मीनकी दहेलती ॥८॥

मेहका है ज़मीनपर दंडेड़ा ।
गर्मीका डुबो दिया है बेड़ा ॥९॥

बिजली है कभी जो कौंद जाती ।
आँखोंमें है रोशनी-सी आती ॥१०॥

घनघोर घटाअें छा रही हैं ।
जन्नतकी हवाअें आ रही हैं ॥११॥

कोसों, है जिधर निगाह जाती ।
कुदरत है नज़र ख़ुदाकी आती ॥१२॥

सूरजने नक़ाब ली है मुँहपर ।
और धूपने तह किया है बिस्तर ॥१३॥

बाग़ोंने किया है गुस्ले सेहत ।
खेतोंको मिला है सब्ज़ ख़िलअत ॥१४॥

सब्ज़े से कोह व दश्त मामूर ।
है चार तरफ़ बरस रहा नूर ॥१५॥

बटिया है न है सड़क नमूदार ।
अटकलसे हैं राह चलते रहवार ॥१६॥

है संगो शजरकी अेक वर्दी।
आलम है तमाम लाजवरदी ॥१७॥

फूलोंसे पटे हुअे हैं कुहसार।
दूल्हा-से बने हुअे हैं अशजार ॥१८॥

पानीसे भरे हुअे हैं जल-थल।
है गूँज रहा तमाम जंगल ॥१९॥

करते हैं पपीहे पीहू पीहू।
और मोर चिंघाड़ते हैं हर सू ॥२०॥

कोयलकी है कूक जी लुभाती।
गोया कि है दिलमें बैठी जाती ॥२१॥

मेंढक जो हैं बोलने पे आते।
संसारको सरपे हैं अुठाते ॥२२॥

रक्षक जो बड़े हैं जैन मतके।
ढकने हैं दियों पे ढकते फिरते ॥२३॥

करते हैं वह यूँ जियोंकी रक्षा।
ता जल न बुझे कोअी पतंगा ॥२४॥

है शुक्र गुजार तेरे बरसात।
अिन्साँसे लेके ता जमादात ॥२५॥

दुनियामें बहुत थी चाह तेरी।
सब देख रहे थे राह तेरी ॥२६॥

दरिया तुझ बिन सिसक रहे थे ।
और बन तेरी राह तक रहे थे ॥२७॥

दरियाओंमें तूने डाल दी जाँ ।
और तुझसे बनोंको लग गयी शाँ ॥२८॥

जिन झिलोंमें कल थी ख़ाक अुड़ती ।
मिलती नहीं आज थाह अुनकी ॥२९॥

दौलत जो ज़मीनमें थी मख़फ़ी ।
आगे तेरे अुसने सब अुगल दी ॥३०॥

थे रेतके जिस ज़मीं पे अम्बार ।
है बीरबहोटियोंसे गुलनार ॥३१॥

ज़ोरों पे चढ़ा हुआ है पानी ।
मौज़ोंकी हैं सूरतें डरानी ॥३२॥

नावें कि हैं डगमगा रही हैं ।
मौजोंके थपेड़े खा रही हैं ॥३३॥

मल्लाहोंके अुड़ रहे हैं ओसाँ ।
बेड़ेका ख़ुदा ही है निगहबाँ ॥३४॥

मँझधारकी रौ भी ज़ोरपर है ।
मछलीको भी जानका ख़तर है ॥३५॥

ख़ुसरोकी पहेलियाँ

ऊँची अटारी पलंग बिछायो, मैं सोओी मेरे सिरपर आयो ।
खुल गयी अँखियाँ भयो अनन्द, अै सखी साजन ना सखी चन्द ॥
अेक सजन वह गहरा प्यारा, जासे मेरा घर अुजियारा ।
भोर भअी तब बिदा मैं किया, अै सखी साजन ना सखी दिया ॥
वह आवे तब शादी होय, अुस बिन दूजा और न कोय ।
मीठे लागे वाके बोल, अै सखी साजन ना सखी ढोल ॥
बख़त-बे-बख़त मोयँ वाकी आस, रातदिना वह रहवत पास ।
मेरे मनको सब करत है काम, अै सखी साजन ना सखी राम ॥
तन, मन, धनका है वह मालिक, वाने दिया मेरे गोदमें बालक ।
वासे निकसत जीको काम, अै सखी साजन ना सखी राम ॥

हालीके शेर

जहाँमें हाली किसीपै अपने सिवा भरोसा न कीजियेगा ।
यह भेद है अपनी ज़िन्दगीका बस अिसकी चर्चा न कीजियेगा ॥
हो लाख गैरोंका ग़ैर कोअी न जानना अुसको ग़ैर हरगिज़ ।
जो अपना साया भी हो तो अुसको तसव्वुर अपना न कीजियेगा ॥
लगाव तुममें न लाग ज़ाहिद न दर्दे अुल्फ़तकी आग ज़ाहिद ।
फिर और क्या कीजियेगा आख़िर जो तर्के दुनिया न कीजियेगा ॥

* * *

तुझमें जोत अै शमा है किस बर्क़े आलम सोज़की !
जानो दिलसे तुझपै परवाना जो यूँ क़ुरबान है ॥

* * *

दिलमें हालीके रहे बाक़ी न बस अरमान कुछ ।
जीमें है कुछ अब अगर बाक़ी तो यह अरमान है ॥

* * *

मौजूद हुनर हों ज़ातमें जिसकी हज़ार ।
बदज़न न हो अैब अुसमें गर हो दो चार ॥
ताअूसके पाये ज़िश्त पर करके नज़र ।
कर हुस्नो जमालका न अुसके अिनकार ॥

* * *

मुमकिन है कि हो जाय फ़रिश्ता अिन्साँ ।
मुमकिन है बदीका न रहे अुसमें निशाँ ॥
मुमकिन तो है सब कुछ पै हक़ीक़त है यही ।
अिन्साँ है अब तक वही करनुल-शैताँ ॥

* * *

अै वक़्त ! बिगाड़का है सबसे चारा ।
पर तुझसे बिगड़नेका नहीं है यारा ॥
हो जाय गर अेक तू हमारा साथी ।
फिर ग़म नहीं, फिर जाय ज़माना सारा ॥

* * *

अेहसानके है गर सिलेकी ख़्वाहिश तुमको ।
तो अिससे यह बेहतर है कि अेहसाँ न करो ॥
करते हो गर अेहसान तो कर दो अुसे आम ।
अितना कि जहाँमें कोअी ममनून न हो ॥

*   *   *

जैसा नज़र आता हूँ न अैसा हूँ मैं ।
और जैसा समझता हूँ न वैसा हूँ मैं ॥
अपनेसे भी अैब हूँ छिपाता अपने ।
बस मुझको ही है मालूम है जैसा हूँ मैं ॥

*   *   *

आती नहीं है शर्म तुझे अै ख़ुदा-परस्त !
दिलमें कहीं निशाँ नहीं तेरे यक़ीनका ॥१॥
जीमें तेरे हज़ारों गुज़रते हैं वसवसे ।
होती नहीं क़बूल तेरी अिक अगर दुआ ॥२॥
तुझसे हज़ार मर्तबा बेहतर है बुतपरस्त ।
जिसका यक़ीं है तेरे यक़ींसे कहीं सिवा ॥३॥
वह माँगता बुतोंसे मुरादें है अुम्रभर ।
गो हाजत अुसकी अुनसे हुअी है न हो रवा ॥४॥
आता नहीं यक़ीनमें अुसके कमी कुसूर ।
अुम्मीद अुसकी रोज़ फ़िज़ूँ है और अिल्तजा ॥५॥
गो बन्दअे ग़रज़ है वह राज़ी रज़ापे है ।
वह है, कि यह बन्दगी अै बन्दअे ख़ुदा ॥६॥

अकबर अिलाहाबादीके शेर

रोना है तो अिसीका, कोअी नहीं किसीका ।
दुनिया है और मतलब, मतलब है और अपना ॥
अय बिरहमन, हमारा तेरा है अेक आलम ।
हम ख़्वाब देखते हैं, तू देखता है सपना ॥

*　　*　　*

जी अुठा मरनेसे वो, जिसकी दापर थी नज़र ।
जिसने दुनिया ही को पाया था, वह सब खोके मरा ॥

*　　*　　*

करेगा क़द्र जो दुनियामें अपने आनेकी ।
अुसीकी जानको लज़्ज़त मिलेगी जानेकी ॥

*　　*　　*

मज़ा भी आता है दुनियासे दिल लगानेमें ।
सज़ा भी मिलती है दुनियासे दिल लगानेकी ॥

*　　*　　*

मेरी ना-कामयाबीकी कोअी हद हो नहीं सकती ।
सदाक़त चल नहीं सकती, ख़ुशामद हो नहीं सकती ॥

*　　*　　*

हुकूमत अुसकी अुसीकी मर्ज़ी, अुसीके सब काम और धंदे ।
कहाँके अिंग्लिश, कहाँके नेटिव, ख़ुदाकी दुनिया, ख़ुदाके बन्दे ॥

*　　*　　*

लोग कहते हैं कि हैं आप निहायत क़ाबिल।
मैं अिसी सोचमें रहता हूँ कि किस क़ाबिल हूँ॥

* * *

जो मिल गया वो खाना, दाताका नाम जपना।
अिसके सिवा बताअूँ, क्या तुमको काम अपना॥

* * *

कहा बुक़रातसे दुनियामें क्यूँ आया तू अय दाना।
कहा अुसने कि मैं लाया गया मुझको पड़ा आना॥
कहा—क्यूँ कर बसर की अुम्र? बोला साथ हैरतके।
कहा क्या जाना? बोला—कुछ नहीं जाना, यही जाना॥

*

ग़फ़लतकी हँसीसे आह भरना।
अफ़आले मुज़िरसे कुछ न करना अच्छा॥
अकबरने सुना है अहले ग़ैरतसे यही।
जीना ज़िल्लतसे हो तो मरना अच्छा॥

*

जुदाअीने 'मैं' बनाया मुझको, जुदा न होता तो मैं न होता।
ख़ुदाकी हस्ती है मुझसे साबित, ख़ुदा न होता तो मैं न होता॥

* * *

हम अुर्दूको अरबी क्यों न करें, अुर्दूको वो भाषा क्यों न करें।
झगड़ेके लिये अख़बारोंमें, मज़मून तराशा क्यों न करें॥

आपसमें अदावत कुछ भी नहीं, लेकिन अेक अखाड़ा क़ायम है।
जब अिससे फ़लकका दिल बहले, हम लोग तमाशा क्यों न करें ॥

*

कहता हूँ हिन्दू वो मुसलमाँसे यही।
अपनी अपनी रविश पै तुम नेक रहो ॥
लाठी है हवाये दहर पानी बन जाओ।
मौजोंकी तरह लड़ो मगर अेक रहो ॥

हे मातृभूमि !

तेरी रजमें लोट लोटकर बड़े हुअे हैं,
घुटनोंके बल सरक सरककर खड़े हुअे हैं ॥
परमहंस सम बाल्यकालमें सब सुख पाये,
तेरे कारण धूल-भरे हीरे कहलाये ॥
पाकर तुझसे सभी सुखोंको हमने भोगा,
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा ॥
तेरी ही यह देह तुझीसे बनी हुअी है,
बस तेरे ही सुजस-वारिसे सनी हुअी है ॥
जिस पृथ्वीमें मिले हमारे पूर्वज सारे,
अुससे हे भगवान ! कभी हम रहें न न्यारे ॥

लोट लोटकर यहीं हृदयको शान्त करेंगे,
अिसमें मिलते समय मृत्युसे नहीं डरेंगे ॥
तू पालित यह देह तुझीपर हम वारेंगे,
गौरव तेरे सुत होनेका हम धारेंगे ॥

***

सारे जहाँसे अच्छा

सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं अिसकी यह गुलिस्ताँ हमारा ॥
गुरबतमें हों अगर हम, रहता है दिल वतनमें।
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहाँ हमारा ॥
परबत वह सबसे अूँचा हमसाया आसमाँका।
वह सन्तरी हमारा, वह पासबाँ हमारा ॥
गोदीमें खेलती हैं अिसकी हजारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दमसे रश्के-जिनाँ हमारा ॥
अय आबरूदे-गंगा! वह दिन है याद तुझको।
अुतरा तेरे किनारे जब कारवाँ हमारा ॥
मज़हब नहीं सिखाता आपसमें बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा ॥
यूनानो मिसरो रूमा सब मिट गये जहाँसे।
अबतक मगर है बाकी नामो निशाँ हमारा ॥

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे ज़माँ हमारा ॥

'अिक़बाल' कोअी महरम अपना नहीं जहाँमें ।
मालूम क्या किसीको दर्दे निहाँ हमारा ॥

*
**

क़ौमी गीत

दावा है हर आन हमारा ।
सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

जंगल और गुलज़ार हमारे, दरिया और कुहसार हमारे,
कूचे और बाज़ार हमारे, फूल हमारे ख़ार हमारे,
हर घर हर मैदान हमारा ।
सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

गो नहीं हममें फ़ौजी कूव्वत, फिर भी बहुत है दिलमें हिम्मत,
और हमारे साथ है कुदरत, अब कोअी ताक़त कोअी हुकूमत,
रोक तो दे तूफ़ान हमारा ।
सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

हमसे भारतकी रौनक़ है, आज़ादी दिन रात सबक़ है,
अपनी धुनक है अपनी सड़क है, हर ज़रेंपर अपना हक़ है,
खेत अपने दहक़ान हमारा ।
सारा हिन्दुस्तान हमारा ॥

हिन्दका मालिक हर हिन्दी हो, सिर्फ़ यहाँ अिक क़ौम बसी हो,
बार न पाअे ख़्वाह कोअी हो, चाहे वह ख़ुद अपनी ही ख़ुदी हो,
देख ज़रा अरमान हमारा।
सारा हिन्दुस्तान हमारा॥

*
**

नया शिवाला

सच कह दूँ अै बिरहमन! गर तू बुरा न माने,
तेरे सनमकदोंके बुत हो गये पुराने॥
अपनोंसे बैर रखना तूने बुतोंसे सीखा,
जंगो जदल सिखाया वाअज़को भी ख़ुदाने॥
तंग आके मैंने आख़िर दैरोहरमको छोड़ा,
वाअज़का वाज़ छोड़ा, छोड़े तिरे फ़साने॥
पत्थरकी मूरतोंमें समझा है तू ख़ुदा है,
ख़ाके वतनका मुझको हर ज़र्रा देवता है॥
आ, गैरियतके पर्दे अिक बार फिर अुठा दें,
बिछड़ोंको फिर मिला दें, नक़्शे दुअी मिटा दें॥
सूनी पड़ी हुअी है मुद्दतसे दिलकी बस्ती,
आ, अिक नया शिवाला अिस देसमें बना दें॥
दुनियाके तीरथोंसे अूँचा हो अपना तीरथ,
दामने आस्मोसे अुसका कलस मिला दें॥

हर सुबह अुठके गायें मन्तर वह मीठे मीठे,
सारे पुजारियोंको मय पीतकी पिला दें ॥
शक्ती भी शान्ती भी भगतोंके गीतमें है,
धरतीके बासियोंकी मुकती पिरीतमें है ॥

⁂

कुछ शेर

तुम्हारी तहज़ीब अपने ख़ंजरसे आप ही ख़ुदकुशी करेगी ।
जो शाख़े नाज़ुकपे आशियाना बनेगा नापायदार होगा ॥

* * *

ख़ुदाके आशिक़ तो हैं हज़ारों बनोंमें फिरते हैं मारे मारे ।
मैं अुसका बन्दा बनूँगा जिसको ख़ुदाके बन्दोंसे प्यार होगा ॥

* * *

वो चीज़, नाम है जिसका जहाँमें आज़ादी ।
सुनी ज़रूर है देखी कहीं नहीं मैंने ॥
ख़ुदा तो मिलता है अिन्सान ही नहीं मिलता ।
य' चीज़ वह है कि देखी कहीं कहीं मैंने ॥

* * *

हुस्ने-अज़लकी पैदा हर चीज़में झलक है ।
अिन्साँमें वह सख़ुन है गुंचेमें वह चटक है ॥

यह चाँद आसमाँका शायरका दिल है गोया।
वाँ चाँदनी है जो कुछ याँ दर्दकी कसक है॥
कसरतमें हो गया है वहदतका राज़ मख़्फ़ी।
जुगनूमें जो चमक है वह फूलमें महक है॥

*   *   *

वतनकी फ़िक्र कर नादाँ! मुसीबत आनेवाली है।
तेरी बर्बादियोंके मश्विरे हैं आसमानोंमें॥
न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्ताँवालो।
तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानोंमें॥

*
**

स्वयमागत

तेरे घरके द्वार बहुत हैं किससे होकर आऊँ मैं!
सब द्वारोंपर भीड़ बड़ी है कैसे भीतर जाऊँ मैं!

द्वारपाल भय दिखलाते हैं,
कुछ ही जन जाने पाते हैं,
शेष सभी धक्के खाते हैं,
कैसे घुसने पाऊँ मैं!
तेरे घरके द्वार बहुत हैं, किससे होकर आऊँ मैं!

मुझमें सभी दैन्य दूषण हैं,
न तो वस्त्र हैं, न विभूषण हैं,

लज्जित किंतु यहाँ पूषण है,
अपना क्या दिखलाऊँ मैं ?
तेरे घरके द्वार बहुत हैं, किससे होकर आऊँ मैं ?

मुझमें तेरा आकर्षण है,
किन्तु यहाँ घन संघर्षण है,
अिसीलिये दुर्धर घर्षण है,
क्योंकर तुझे बुलाऊँ मैं ?
तेरे घरके द्वार बहुत हैं, किससे होकर आऊँ मैं ?

तेरी विभव कल्पना करके,
अुसके वर्णनसे मन भरके,
भूल रहे हैं जन बाहरके,
कैसे तुझे भुलाऊँ मैं ?
तेरे घरके द्वार बहुत हैं, किससे होकर आऊँ मैं ?

बीत चुकी है बेला सारी,
आयी किन्तु न मेरी बारी,
करूँ कुटीकी अब तैयारी,
वहीं बैठ पछताऊँ मैं ?
तेरे घरके द्वार बहुत हैं, किससे होकर आऊँ मैं ?

कुटी खोल भीतर आता हूँ,
तो वैसा ही रह जाता हूँ,
तुझको यह कहते पाता हूँ,

"अतिथि! कहो, क्या लाऊँ मैं?"
तेरे घरके द्वार बहुत हैं, किससे होकर आऊँ मैं?

***

सीखो

फूलोंसे नित हँसना सीखो, भौंरोंसे नित गाना,
तरुकी झुकी डालियोंसे नित सीखो शीश झुकाना,
सीख हवाके झोंकोंसे लो हिलना नित्य हिलाना,
दूध तथा पानीसे सीखो मिलना और मिलाना ॥

सूरजकी किरणोंसे सीखो जगना और जगाना,
लता और पेड़ोंसे सीखो, सबको गले लगाना,
वर्षाकी बून्दोंसे सीखो सबसे प्रेम बढ़ाना,
मेहन्दीसे सीखो सब ही पर अपना रंग जमाना ॥

मछलीसे सीखो, स्वदेशके लिये तड़पकर मरना,
पतझड़के पेड़ोंसे सीखो, दुखमें धीरज धरना,
दीपकसे सीखो, जितना हो सके अन्धेरा हरना,
पृथ्वीसे सीखो प्राणीकी सच्ची सेवा करना ॥

जलधारासे सीखो निर्भय जीवन-पथमें बढ़ना,
और धुएँसे सीखो हरदम ऊँचे ही पर चढ़ना,
सत्पुरुषोंके जीवनसे सीखो चरित्र निज गढ़ना,
तथा प्रेमसे सीखो मित्रो! सतूपद्योंका पढ़ना ॥

***

हो शंखनाद या हो अज़ान

दोनोंको भूख सताती है हिन्दू हो या हो मुसलमान ।
दोनोंपर आफ़त आती है हिन्दू हो या हो मुसलमान ॥
दोनों मरते हैं अेक तरह, दोनों जीते हैं अेक तरह ।
फिर अिस झगड़ेका मतलब क्या ? हम हिन्दू तुम मुसलमान ॥

दोनों हैं फँसे गुलामीमें दोनों काले कहलाते हैं ।
अपमान मान सब अेक तरह दोनों विदेशमें पाते हैं ॥
दोनोंको जिसमें रहना है वो देश न वह हिन्दोस्तान ।
फिर अिस झगड़ेका मतलब क्या ? हम हिन्दू तुम मुसलमान ॥

मन्दिर जा सकता है तोड़ा, मस्जिद जा सकती है तोड़ी ।
दोनों ही हैं मिट्टी पत्थर समझो हो अक्ल अगर थोड़ी ॥
यदि आग बढ़ेगी दंगेकी दोनों ही होंगे परेशान ।
फिर अिस झगड़ेका मतलब क्या ! हम हिन्दू तुम मुसलमान ॥

जिस राहे-ख़ुदामें लड़ते हैं, अुसमें लड़ना है सख़्त मना ।
अीश्वरको जिसने जान लिया अुसको क्या ग़ैर व क्या अपना ॥
यदि हिन्दू सच्चे हिन्दू हैं, यदि मुसलमान हैं मुसलमान ।
तो प्रभुको शीश झुका देंगे, हो शंखनाद या हो अज़ान ॥

*
**

हिन्दू-मुसलमाँ

हिन्दकी आनबान हैं दोनों, तन है अिक और जान हैं दोनों ॥
ख़ल्क़ अिसपर ज़रा निगाह करे, अपने ख़ालिक़की शान हैं दोनों ॥
बार अपना अुठा नहीं सकते, अिस क़दर नातवान हैं दोनों ॥
फ़र्ज़ अिनपर है अिसकी रखवाली, मुल्कके पासबान हैं दोनों ॥
न हरम न अब वह बुतख़ाना, टूटे फूटे मकान हैं दोनों ॥
तीर औरोंपे क्या लगायँगे, ख़ुद यह अुतरी कमान हैं दोनों ॥
फिर पढ़ो "नूह" तुम वही मिसरा,
हिन्दकी आनबान हैं दोनों ॥

***

ग़ालिब के शेर

हविसको है निशाते कार क्या क्या ?
न हो मरना तो जीनेका मज़ा क्या ?

* * *

अिशरते क़तरा है दरियामें फ़ना हो जाना ।
दर्दका हदसे गुज़रना है दवा हो जाना ॥

* * *

रंजसे ख़ूगर हुआ अिन्साँ तो मिट जाता है रंज ।
मुश्किलें मुझपर पड़ीं अितनी कि आसाँ हो गयीं ॥

* * *

अुनके देखेसे जो आ जाती है मुँहपर रौनक़ ।
वो समझते हैं कि बीमारका हाल अच्छा है ॥
क़तरअ दरियामें जो मिल जाय तो दरिया हो जाय ।
काम अच्छा है वो जिसका कि मआल अच्छा है ॥
हमको मालूम है जन्नतकी हक़ीक़त लेकिन ।
दिलके ख़ुश रखनेको 'ग़ालिब' य' ख़याल अच्छा है ॥

*   *

'ग़ालिब' बुरा न मान जो वाअज़ बुरा कहे ।
अैसा भी कोअी है कि सब अच्छा कहें जिसे ॥

*   *

अिस सादगीपै कौन न मर जाय अै ख़ुदा ।
लड़ते हैं मगर हाथमें तलवार भी नहीं ॥

***

चरखा गीत

चला हमारा अपना चरखा, चरखा मनका मीत,
गूँज अुठा अिसके भन-भनमें जन-जनका संगीत ।

धसक रही धरती धक्कोंमें,
पुतलीघरके अुन चक्कोंमें,
बन्ध कर लोहके लच्छोंमें,
वहाँ सभी भयभीत ।

यहाँ फूट है सबकी सबसे, जन जनकी है जीत,
चला हमारा अपना चरखा, चरखा मनका मीत ॥१॥

सीधे सच्चे अिस तकुअेका पक्का पतला तार,
बढ़ बढ़कर ले सकता है यह सात समन्दर पार।

लोट पाट करके औरोंमें,
जले फुँके अुजड़े ठौरोंमें,
बन बैठे जो सर मोरोंमें,
भय अुसका निस्सार।

यहाँ हमारे अिस चरखेमें सकल सुखी संसार,
सीधे सच्चे अिस तकुअेका पक्का पतला तार ॥२॥

अिस घर-घर-घरमें आती है अुन खेतोंकी याद,
अुमड़-घुमड़ आया था जिनपर सावनका अुन्माद।

खेत खेतमें साख भरी थी,
आगेकी अभिलाष भरी थी,
धरती चारों ओर हरी थी,
लायी थी सम्वाद।

जुग जुगसे है अन्न-वसनकी अमिट यहाँ मरयाद,
अिस घर-घर-घरमें आती है अुन खेतोंकी याद ॥३॥



खादी गीत

खादीके धागे धागेमें,
अपनेपनका अभिमान भरा,
माताका अिसमें मान भरा,
अन्यायीका अपमान भरा,

खादीके रेशे रेशेमें,
अपने भाअीका प्यार भरा,
मा-बहनोंका सत्कार भरा,
बच्चोंका मधुर दुलार भरा ।

खादीकी रजत चंद्रिका जब,
आकर तनपर मुसकाती है,
तब नव-जीवनकी नयी ज्योति,
अन्तस्तलमें जग जाती है ।

खादीसे दीन-विपन्नोंकी,
अुत्तप्त, अुसास निकलती है,
जिससे मानव क्या पत्थरकी—
भी छाती कड़ी पिघलती है ।

खादीमें कितने ही दलितोंके,
दग्ध हृदयकी याद छिपी,
कितनोंकी कसक-कराह छिपी,
कितनोंकी आहत आह छिपी ।

खादीमें कितने ही नंगों,
भिखमंगोंकी है आस छिपी,
कितनोंकी अिसमें भूख छिपी,
कितनोंकी अिसमें प्यास छिपी।

खादी तो कोअी लड़नेका,
है जोशीला रणगान नहीं,
खादी है तीर-कमान नहीं,
खादी है खंग-कृपाण नहीं।

खादीको देख देख तो भी,
दुश्मनका दल थहराता है,
खादीका झण्डा सत्य शुभ्र,
अब सभी ओर फहराता है।

खादीकी गंगा जब सिरसे,
पैरोंतक बह लहराती है,
जीवनके कोने कोनेकी,
तब सब कालिख धुल जाती है।

खादीका ताज चाँद-सा जब,
मस्तकपर चमक दिखाता है,
कितने ही अत्याचार-ग्रस्त,
दीनोंके त्रास मिटाता है।

आदी ही भर भर देश-प्रेमका,
प्याला मधुर पिलायेगी,
आदी ही दे दे संजीवन,
मुर्दोंको पुनः जिलायेगी।

आदी ही बढ़, चरणोंपर पड़,
नूपुर-सी लिपट मनायेगी,
आदी ही भारतसे रूठी,
आज़ादीको घर लायेगी।

***

मातृभूमिके सैनिक हैं

हम मातृभूमिके सैनिक हैं,
आज़ादीके मतवाले हैं,
बलिवेदीपर हँस-हँस करके,
निज शीश चढ़ानेवाले हैं।

केसरिया बाना पहन लिया,
तब फिर प्राणोंका मोह कहाँ!
जब बने देशके सन्यासी,
नारी-बच्चोंका छोह कहाँ!

जननीके वीर पुजारी हैं,
सर्वस्व लुटानेवाले हैं,
हम मातृभूमिके सैनिक हैं,
आज़ादीके मतवाले हैं ।

अब देश-प्रेमकी रंगतमें,
रंग गया हमारा यह जीवन,
अुसके ही लिये समर्पित है,
सब कुछ अपना यह तन-मन-धन ।

आगेको बढ़ा चरण रणमें,
पीछे न हटानेवाले हैं,
हम मातृभूमिके सैनिक हैं,
आज़ादीके मतवाले हैं ।

सन्तान शूर-वीरोंकी हैं,
हम दास नहीं कहलायेंगे,
या हम स्वतंत्र हो जायेंगे,
या रणमें मर मिट जायेंगे ।

हम अमर शहीदोंकी टोलीमें,
नाम लिखानेवाले हैं,
हम मातृभूमिके सैनिक हैं,
आज़ादीके मतवाले हैं ।

*
**

बेटीकी विदा

प्यारी बहिन, सौंपती हूँ मैं अपना तुम्हें ख़ज़ाना,
है अिसपर अधिकार तुम्हारे बेटेका मनमाना।
रक्त, मांस, हड्डी, तन मेरा है यह बेटी प्यारी,
करो अिसे स्वीकार, हुअी यह अब सब भाँति तुम्हारी ॥ १ ॥

पूजे कअी देवता हमने तब है अिसको पाया,
प्राण समान पालकर अिसको अितना बड़ा बनाया।
आत्मा ही यह आज हमारी हमसे बिछुड़ रही है,
समझाती हूँ जीको तो भी धरता धीर नहीं है ॥ २ ॥

बहिन ढिठाअी माताकी तुम मनमें नेक न धरियो,
अिस कोमल बिरवाकी रक्षा बड़े चावसे करियो।
है यह नम्र मेमनेसे भी, भीरु मृगीसे बढ़कर,
कड़ी बात या चितवनसे यह कँप जाती है थर थर ॥ ३ ॥

है गँवार यह भोली, अिसने नहीं शिष्टता जानी,
तिसपर भी गुरुजनकी आज्ञा बड़े प्रेमसे मानी।
साँचेमें तुम अिसे ढालियो, कभी न यह तड़केगी,
बहिन सिखानेसे चतुराअी बेटी सीख सकेगी ॥ ४ ॥

यह गुड़िया, यह लक्ष्मी अपनी, जीवन मूल दुलारी,
हृदय थामकर करती हूँ मैं अब आँखोंसे न्यारी।

माता-नेह सोच तुम मनमें दुख मेरा अनुमानो,
ममता छिपती नहीं छिपाये, बहिन सत्य यह जानो ॥ ५ ॥

अिसका रूप निहार दिव्य मैं पल पल सुख पाती थी,
गान-समान सुरीली बोली अिसकी मन भाती थी।
बहिन तुम्हें भी ये सब बातें जान पड़ेंगी आगे,
अपने नैन रखोगी अिसपर जब तुम भी अनुरागे ॥ ६ ॥

अिसकी मंद हँसीसे मेरा मन अति सुख पाता था,
कठिन घाव भी जिससे दुखका अच्छा हो जाता था।
अिसे अुदास देख आँखोंमें भर आता था पानी,
छिपी नहीं है बहिन, किसीसे माता-प्रेम कहानी ॥ ७ ॥

बड़ी लालसा भी निज मनकी अिसने नहीं बतायी,
कर संकोच कठिन पीड़ा भी अपनी सदा छिपायी।
तो भी मैं सब लख लेती थी अिसके बिना कहे ही,
यों ही तुम अिसकी सब बातें लखियो, बहिन सनेही ॥ ८ ॥

अपना मांस-पिंड देती हूँ मैं तनसे कर न्यारा,
है यह जीवन मेरे जीका, आँखोंका है तारा।
अिस अनाथ बच्चीका पालन माता सम तुम कीजो,
मेरी अिस बलहीन दशामें बहिन, बाँह गह लीजो ॥ ९ ॥

करो बहिन, स्वीकार दयाकर मेरी अितनी विनती,
बच्चोंमें अपने तुम करियो अिस बेटीकी गिनती।

दीजे बहिन, भरोसा मुझको हाथ हाथमें देकर,
"बेटी-सम पालेंगी अिसको हम माता-सम होकर" ॥१०॥

मेरी ये आँखें पीती थीं नित जो रूप मनोहर,
क्या अुसके दर्शनका मुझको फिर न मिलेगा अवसर ?
जिस बोलीसे धीरे धीरे अिसे बुलाती थी मैं,
क्या वह भी अब मूक रहेगी रख जीकी जी ही में ॥११॥

हा मेरी अनमोल लाडली ! प्राणाधार दुलारी !
क्या तू मुझे नहीं समझेगी अब अपनी महतारी ?
तुझे नयी माता मिलती है, मैं तुमको खोती हूँ,
यही सोचकर सुखमें तेरे, बेटी, मैं रोती हूँ ॥१२॥

हाय ! आजसे हुआ हमारा यह घर भरा अँधेरा,
होकर निपट निरास न क्यों अब हृदय फटेगा मेरा ?
अब मेरे अिस सूने घरको अुजाला कौन करेगी ?
कौन मधुर बातोंसे मेरा रीता हृदय भरेगी ॥१३॥

कौन सुरीली बीन बजाकर मधुर गीत गावेगी ?
घरमें कौन लड़कियाँ छोटी न्योत न्योत लावेगी ?
सखियोंके संग कौन खायगी, खेलेगी, झूलेगी ?
किसको सुन रामायण पढ़ते यह छाती फूलेगी ॥१४॥

हा बेटी ! हा गुड़िया मेरी ! हा मेरी सुकुमारी !
तेरे बिना हृदय यह मेरा पावेगा दुख भारी !
केवल देव दयामय जो दुख लख सकता है जनका,
वही धीर दे, दूर करेगा संकट मेरे मनका ॥१५॥

आकर वहाँ दूर, हे बेटी, मुझे भूल मत जाना,
कभी कभी अिस दुखियाकी भी सुध निज मनमें लाना।
रो मत, बेटी! जा अपने घर संग नयी माताके,
लीजे बहिन, अिसे अब, देती हूँ मैं सीस नवाके ॥१६॥



दशहरा

आ गया प्यारा दशहरा, छा गया अुत्साह बल।
मातृ-पूजा, शक्ति-पूजा, वीर-पूजा है विमल ॥
हिन्दमें यह हिन्दुओंका विजय-अुत्सव है ललाम।
शरद्‌की अिस सुअृतुमें है खड्ग-पूजा धाम धाम ॥
दिखने लगे खंजन यहाँ, रहने लगे चकवा अशोक।
चल पड़े योगी यती मगकी मिटी सब रोक टोक ॥
भरने लगे बाज़ार हैं, खुलने लगे व्यापार द्वार।
सज़ने लगे सेना नृपति बजने लगे बाजे अपार ॥
यह दशहरा क्षत्रियोंका प्राण जीवन पर्व है।
हिन्दके अितिहासमें अिस पर्वका अति गर्व है ॥
वीर पुरुषोंको यही संजीवनीका काम दे।
जीत दे फिर कीर्ति दे फिर मान दे धन धाम दे ॥
थी विजय दशमी यही जब रामने दल साजकर।
गिरि प्रवर्षणसे चढ़ाअी की थी लंका राजपर ॥

मार रावणको वहाँ अुद्धार सीताका किया।
और लंकाका विभीषणको तिलक था दे दिया॥

अुस समयसे अिस दशहरेका बड़ा सम्मान है।
मान गुणका यह प्रवर्तक क्षत्रियोंका प्राण है॥

आज करते हैं विजयकी कामना सब वीरवर।
जाँचते हैं दृष्टि कर गज अश्व दल हथियारपर॥

श्रेय विजयासे भरे अितिहासके बहु पत्र हैं।
आज भी प्रतिबिम्ब अुसका देखते हम अत्र हैं॥

जो सबक लेना हमें अुससे अुचित लेते नहीं।
स्वार्थ-पशु-बलि त्यागकी तलवारसे देते नहीं॥

अिन्द्रियोंकी वासना ही है असुर, शंका नहीं।
ज्ञान-शरसे जीतते हैं लोभकी लंका नहीं॥

हन्त, जो कुविचार-रावण है अुसे तजते नहीं।
क्या कहें, सुविचार श्रीवर रामको भजते नहीं॥

नाश कर कुविचारका सद्बुद्धि सीता लाअिये।
नृप विभीषणकी तरह संतोषको अपनाअिये॥

शान्त हो प्यारी अवध, फिर राज्य अुसका कीजिये।
'भीर, विजयाकी विजयका अिस तरह यश लीजिये॥



गिरजासे घंटेकी टन् टन्

मन्दिरसे शंखोंकी तानें,
मस्जिदसे पाक्बद अज़ानें,
अुठाकर नित्य किया करती हैं,
अपने भक्तोंका आवाहन
गिरजासे घण्टेकी टन् टन् ॥

मेरा मन्दिर था, प्रतिमा थी,
मनमें पूजाकी महिमा थी,
किन्तु निरभ्र गगनसे गिरकर,
वज्र गया कर सबका खण्डन
गिरजासे घण्टेकी टन् टन् ॥

जब ये पावन ध्वनियाँ आतीं,
शीश झुकाने दुनिया जाती,
अपनेसे पूछा करता मैं,
करूँ कहाँ मैं किसका पूजन ?
गिरजासे घण्टेकी टन् टन् ॥



यह किसका कंकाल पड़ा है

भरी जवानीमें ही अिसके चेहरेपर पड़ गयीं झुर्रियाँ,
पीब पिचपिचाती शरीरमें, भनन् भनन् कर रहीं मक्खियाँ,
क्या मानव अिस तरह निराश्रित,
धरतीपर बेहाल पड़ा है,
यह किसका कंकाल पड़ा है ?

यह किसके भविष्यकी आशा, किस दुखियाका अेक सहारा,
किस अभागिनीका सुहाग यह, किस मृग-नयनीका दृगतारा,
किसकी गोदीकी शोभा यह,
किस माओका लाल पड़ा है ?
यह किसका कंकाल पड़ा है ?

किसी दैवका है प्रकोप यह, या अजगरने चूस लिया है,
या मानवकी दानवताने अिसका जीवन लूट लिया है,
या पूँजीवादी समाजके,
जुल्मोंका जंजाल पड़ा है,
यह किसका कंकाल पड़ा है ?

पापी पेट पालनेमें ही स्नेह सरसता छली गयी है,
छातीपर पत्थर धर माँ भी अभी कामपर चली गयी है,
जिसका स्नेह-लाड़ला पथपर,
दीन दुखी पामाल पड़ा है,
यह किसका कंकाल पड़ा है ?

अुफ कितना भयावना लगता सजल पुतलियाँ फिरा रहा है,
आगेके दो दाँत निकाले यह हम सबको विरा रहा है,

निश्चय यह शोषक वाँका,
जिर प्रतिशोधी काल पड़ा है,
यह किसका कंकाल पड़ा है !

***

ज़ौक़के शेर

जो फ़रिश्ते करते हैं कर सकता है अिन्सान भी।
पर फ़रिश्तोंसे न हो जो काम है अिन्सानका ॥

* * *

सर्फ़ हस्ती कर रहा हूँ वस्लकी अुम्मीदपर।
बे निशाँ हो लूँ तो फिर नामो निशाँ पैदा करूँ ॥

* * *

कहा पतंगने यह दारे शमापर चढ़कर।
अजब मज़ा है जो मर ले किसीके सर चढ़कर ॥

* * *

भूल मत अिल्मे किताबी पर कि आख़िर कब तलक।
नाव काग़ज़की बहे अै तिफ़्ले कोदन आबमें ॥

* * *

कैसा मोमिन कैसा काफ़िर कौन है सूफ़ी कैसा रिन्द ।
सारे बशर हैं बन्दे हक़के सारे शरके झगड़े हैं ॥

*　　　*　　　*

बजा कहे जिसे आलम अुसे बजा समझो ।
ज़ुबाने ख़ल्क़को नक़्क़ारअे ख़ुदा समझो ॥

*　　　*　　　*

तू जान है हमारी और जान है तो सब कुछ ।
ईमानकी कहेंगे, ईमान है तो सब कुछ ॥

*　　　*　　　*

अगर यह जानते चुन चुनके हमको तोड़ेंगे ।
तो गुल कभी न तमन्नाये रंगो बू करते ॥

*　　　*　　　*

गुज़रती है मज़ेमें ज़िन्दगी ग़फ़लत शआरीसे ।
मेरे नज़दीक बेहोशी है बेहतर होशियारीसे ॥

*　　　*　　　*

क्या वह दुनिया जिसमें कोशिश हो न दींके वास्ते ।
वास्ते वाँके भी कुछ या सब यहींके वास्ते ॥

ख़ूँके दरिया बह गये आलम तहो बाला हुअे ।
अै सिकन्दर, किसलिये ? दो गज़ ज़मींके वास्ते ॥

　　　　　　*

बेकरारीका सबब हर कामकी अुम्मीद है।
नाअुमेदीसे मगर आरामकी अुम्मीद है॥

* * *

दर्दे दिलसे लोटता हूँ मेरा किसको दर्द है।
मैं हूँ लफ्ज़े दर्द जिस पहलूसे देखो दर्द है॥

* * *

बन्द न बोले ज़ेरे गर्दू गर कोअी मेरी सुने।
है यह गुम्बदकी सदा जैसी कहे वैसी सुने॥

* * *

गुल भला कुछ तो बहारें अे सबा दिखला गये।
हसरत अुन गुंचोंपे है जो बिन खिले मुरझा गये॥

* * *

कहीं तुझको न पाया गर्चे हमने यक जहाँ ढूँढ़ा।
फिर आख़िर दिलहीमें देखा बग़लहीमेंसे तू निकला॥

* * *

दुनियाके अलम ज़ौक़ अुठा जायेंगे।
हम क्या कहें क्या आये थे क्या जायेंगे॥

* * *

जब आये थे रोते हुअे आप आये थे।
अब जायेंगे औरोंको रुला जायेंगे॥

* * *

हम जानते थे अिल्मसे कुछ जानेंगे ।
जाना तो यह जाना कि न जाना कुछ भी ॥

**
*

वसन्त

हैं फूल सब रँगीले,
हैं सारे पीले पीले,
यह ख़ुशनुमा है मंज़ूर,
हम क्यों न मुस्करायें,
आयी वसन्त की ऋत ॥

धानी हरअेक शै है,
है मस्त जो भी लय है,
आया है ख़ूब मौसम,
हम क्यों न गुनगुनायें,
आयी वसंतकी ऋत ॥

गुलशनका पत्ता पत्ता
दिलकश है और दिल अफ़ज़ा,
हर गुंचा कह रहा है,
आओ लहकके गायें,
आयी वसन्तकी ऋत ॥

आयी वसन्तकी ऋत,
क्यों हम न झूम जायें ॥

**
*

हवा चली

होनेको आयी सुबह तो ठण्डी हवा चली,
क्या धीमी धीमी चालसे यह खुश-अदा चली ॥

लहरा दिया है खेतको हिलती हैं बालियाँ,
पौधे भी झूमते हैं लचकती हैं डालियाँ ॥

फुलवारियोंमें ताज़ा शिगूफ़ा खिला चली,
सोया हुआ था सब्ज़ा अुसे तो ज़गा चली ॥

सरसब्ज़ हो दरख़्त न बाग़ोंमें तुझ बग़ैर,
तेरे ही दमक़दमसे है भायी चमनकी सैर ॥

पड़ जाय अिस जहानमें तेरी अगर कमी,
चौपाया कोअी ज़िन्दा बचे औ न आदमी ॥

चिड़ियोंको यह अुड़ानकी ताक़त कहाँ रहे,
फिर 'कायँ कायँ' हो न 'गुटरगूँ' न 'चहचहे' ॥

बन्दोंको चाहिये कि करें बन्दगी अदा,
अुसकी कि जिसके हुक्मसे चलती है यह हवा ॥

★★
★

हाय नहीं यह देखा जाता

हन्त भूख मानव बैठा गोबरसे दाने बीन रहा है,
और झपट कुत्तेके मुँहसे जूठी रोटी छीन रहा है,
सॉंस न बाहर भीतर जाती,
और कलेजा मुँहको आता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

देख रहा आँखोंके आगे कितने जर्जर पीड़ित अैसे,
भूख प्याससे अूब माँगते जो विष खानेको ही पैसे,
और नहीं वह भी मिलता है,
मानव चीख चीख चिल्लाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

भाग्य लूटनेवालेको वह धर्मवान भगवान बनाता,
जीवन हाय हराम कर दिया अुसकी जय जयकार मनाता,
जिसने सब कुछ छीन लिया,
अुसको ही वह दाता बतलाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

निर्मम शोषकके ही सम्मुख अपने हाथ पसारा करता,
शेष न जिसमें दया-हया कुछ अुससे रो रो आहें भरता,

बलि-बकरे-सा क्रूर कसाओी-
को अपने पहचान न पाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

टेक टेककर टेढ़ी लकड़ी पथपर घूमा करता अंधा,
सुबह शाम चिल्लाया करता 'बाबा, दुनिया गोरखधंधा,'

खाली हाथ लौटता जब घर,
किस्मत ठोंक-ठोंक पछताता,
हाय नहीं यह देखा ज़ाता ॥

मानवकी छातीपर बैठा झूम रहा था नवमतवाला,
सींग पूँछसे हीन पशु बन खींच रहा है रिक्षावाला,

मुँहसे झाग, स्वेद तनसे,
ठोकर खा खाकर गिरता जाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

जिसके बच्चे दूध दूध रट बारी बारी स्वर्ग सिधारे,
फटे चीथड़ोंमें लिपटी बैठी जिसकी रानी मनमारे,

छातीपर पत्थर धर पापी
पेट लिये जब मिलको जाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

अुससे भी भीषण जब मानव व्याकुल भूख भूख चिल्लाता,
अपने ही बच्चोंकी रोटी छीन अुदरकी ज्वाल बुझाता,

बच्चा बेबस रोता रहता,
भूखा तड़प तड़प मर जाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

हो अुठती है घृणा, देखता जब अुसके कुत्सित बानेको,
हाथ पैर गल गये, चाटते खून पीब मिश्रित खानेको,
लोग फेर लेते मुख जब,
घिघियाकर वह निज कर फैलाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

अपने ही भाअी जिसको नित थू थू कहकर दूर हटाते,
नर-पशु जिसे समझ कुत्ते भी भौंक भौंककर दूर भगाते,
तिरस्कार अपमान घृणा सब,
सह वह फिर भी जीता जाता,
हाय नहीं यह देखा जाता ॥

***

अछूतकी आह

अेक दिन हम किसीके लाल थे, आँखके तारे किसीके थे कभी ।
बूँद-भर गिरता पसीना देखकर, था बहा देता घड़ों लोहू कोअी ॥
देवता देवी अनेकों पूजकर, निर्जला रहकर कअी अेकादशी ।
तीरथोंमें जा द्विजोंको दान दे, गर्भमें पाया हमें माँने कहीं ॥

जन्मके दिन फूलकी थाली बजी । दुःखकी रातें कटीं सुख दिन हुआ ।
प्यारसे मुखड़ा हमारा चूमकर । स्वर्ग-सुख पाने लगे माता-पिता ॥

हाय ! हमने भी कुलीनोंकी तरह । जन्म पाया प्यारसे पाले गये ।
जी बचे फूले फले तब क्या हुआ । कीटसे भी नीचतर माने गये ॥

जन्म पाया पूत हिन्दुस्तानमें । अन्न खाया औ यहींका जल पिया ।
धर्म हिन्दूका हमें अभिमान है । नित्य लेते नाम हैं भगवानका ॥
पर अजब अिस लोकका व्यवहार है । न्याय है संसारसे जाता रहा ।
श्वान छूना भी जिन्हें स्वीकार है । है अुन्हें भी हम अभागोंसे घृणा ॥

जिस गलीसे अुच्च कुलवाले चलें । अुस तरफ चलना हमारा दण्ड्य है ।
धर्म-ग्रंथोंकी व्यवस्था है यही ! या किसी कुलवानका पाखण्ड है !

छोड़कर प्यारे पुराने धर्मको, आज अीसाअी-मुसलमाँ हम बने,
नाथ ! कैसा यह निराला न्याय है, तो हमें सानन्द सब छूने लगे ॥

हम अछूतोंसे बताते छूत हैं । कर्म कोअी खुद करें, पर पूत हैं ।
हैं सगोंको ये पराये मानते । क्या यही स्वामी तुम्हारे दूत हैं ?
शासकोंसे माँगते अधिकार हैं । पर नहीं अन्याय अपना छोड़ते ।
प्यारका नाता पुराना तोड़कर । हैं नया नाता निराला जोड़ते ॥

नाथ तुमने ही हमें पैदा किया । रक्त मज्जा मांस भी तुमने दिया ।
ज्ञान दे मानव बनाया फिर भला । क्यों हमें अैसा अपावन कर दिया ?

जो दया-निधि कुछ तुम्हें आये दया । तो अछूतोंकी अुमड़ती आहका ।
यह असर होवे कि हिन्दुस्तानमें । पाँव जम जावे परस्पर प्यारका ॥

**
*

प्यारा है नाम तेरा

ऐ दो जहाँके वाली
ऐ गुलशनोंके माली
हर चीज़से है ज़ाहिर हिकमत तेरी निराली
तेरे ही फ़ैज़से है सरसब्ज़ डाली डाली
पत्तोंमें तेरी रंगत फूलोंमें तेरी लाली
यह सिलसिला जहाँका
दुनियाके गुलसितांका
फूलों भरी ज़मींका तारोंका आस्माँका
सारा है काम तेरा
प्यारा है नाम तेरा
तूने हमें बनाया
और सोचना सिखाया
हर शैमें हमने देखा तेरे करमका साया
जिस रास्तेमें ढूँढ़ा तेरा निशान पाया
ख़ालिक़ है तू ख़ुदाया मालिक है तू ख़ुदाया
इंसान भी हैं तेरे
हैवान भी हैं तेरे
जाँदार भी हैं तेरे बेजान भी हैं तेरे
हर इक गुलाम तेरा
प्यारा है नाम तेरा

***

माया ढलता साया

माया ढलता साया
मूरख
माया ढलता साया

कल मेरी थी आज तुम्हारी, परसों और किसीकी बारी,
अिस मायाका मान न करना, आप अपना नुकसान न करना,
भेद किसीने न अिसका पाया
माया ढलता साया
मूरख
माया ढलता साया

आँखें जिनकी मयखाने थीं, नज़रें जिनकी पैमाने थीं,
कुँवारी कलियोंके बिस्तर थे, सोनेकी अींटोंके घर थे,
मिल गयी खाकमें माया,
माया ढलता साया
मूरख
माया ढलता साया

नरकी खुशबू सूँघते थे जो, खोलके आँख अूँघते थे जो,
पाँवोंमें फूल मसलते थे जो, अूँचे होकर चलते थे जो,
दौलतने अुनको भी मिटाया
माया ढलता साया
मूरख
माया ढलता साया



रामकी याद

कहाँ हो अे हमारे राम प्यारे ?
किधर तुम छोड़कर मुझको सिधारे ॥

बुढ़ापेमें यह दुख भी देखना था ।
अिसीके देखनेको मैं बचा था ॥

छिपायी है कहाँ वह प्यारी मूरत ।
दिखा दो साँवली-सी अपनी सूरत ॥

छिपे हो कौन-से पर्देमें बेटा ।
निकल आओ कि अब मरता है बुड्ढा ॥

बुढ़ापेपर करम जो मेरे करते ।
तो बनकी सिम्त क्यों तुम पाँव धरते ॥

किधर वह बन है जिसमें राम प्यारा ।
अयोध्या छोड़कर सूनी, सिधारा ॥

कहेंगे क्या जनक यह हाल सुनकर ।
कहाँ सीता कहाँ वह बनके कंकर ॥

गया लछमन भी अुनके साथ ही साथ ।
तड़पता रह गया मल मलके मैं हाथ ॥

मिरी आँखोंकी वह पुतली कहाँ है ।
बुढ़ापेकी मिरी लकड़ी कहाँ है ॥

कहाँ ढूँढूँ मुझे कोअी बतादे,

मिरे बच्चोंको बस मुझसे मिला दे ॥

लगी है आग सीनेमें हमारे।

बुझा दे कोअी अुनका हाल कहके ॥

नज़र आता है सूना अब ज़माना।

कहीं भी अब नहीं मेरा ठिकाना ॥

अन्धेरा हो गया घर हाय मेरा।

हुआ क्या मेरे हाथोंका खिलौना ॥

हमारा बोलता तोता कहाँ है।

अरे वह राम-सा बेटा कहाँ है ॥

कमर टूटी न अब मैं अुठ सकूँगा।

अरे बिन रामके कैसे जिअूँगा ॥

कोअी कुछ हाल तो आकर बताता।

कि किस जंगलमें है वह मेरा जाया ॥

जो डरती देखकर मिट्टीका चीता।

वह बनमें फिर रही है आज सीता ॥

जो अुतरी थी न सेजोंसे ज़मींपर।

वह पैदल फिर रही है आज दर दर ॥

न निकली जान अबतक बेहया हूँ।

भला मैं राम बिन क्यों जी रहा हूँ ॥

मिरे जीनेका दिन भी हाय बीता।
कहाँ है राम, लछमन और सीता॥

दिखा दे अपना मुखड़ा राम प्यारे॥
न रह जाअे हविस जीमें हमारे॥

छिपा हो आँखसे जब तुम सा बेटा।
तो मेरी ज़िन्दगी ही का मज़ा क्या॥

★

प्रेम संगीत

हम दीवानोंकी क्या हस्ती? हैं आज यहाँ कल वहाँ चले!
मस्तीका आलम साथ चला, हम धूल अुड़ाते जहाँ चले।

आये बनकर अुल्लास अभी,
आँसू बनकर बह चले अभी॥

सब कहते ही रह गये, अरे तुम कैसे आये, कहाँ चले?
किस ओर चले? यह मत पूछो, चलना है बस अिसलिये चले
जगसे अुसका कुछ लिये चले, जगको अपना कुछ दिये चले।

दो बात कही, दो बात सुनी,
कुछ हँसे और फिर कुछ रोये॥

छककर सुख-दुखके घूँटोंको हम अेक भावसे पिये चले।
हम भिखमंगोंकी दुनियामें, स्वच्छन्द लुटाकर प्यार चले।

हम अेक निशानी-सी अुरपर, ले असफलताका भार चले।
हम मान रहित, अपमान रहित,
जी भरकर खुलकर खेल चुके ॥
हम हँसते हँसते आज यहाँ, प्राणोंकी बाज़ी हार चले।
हम भला बुरा सब भूल चुके, नत मस्तक हो, मुख मोड़ चले।
अभिशाप अुठाकर होठोंपर, वरदान दृगोंसे छोड़ चले।
अब अपना और पराया क्या?
आबाद रहें रुकनेवाले!
हम स्वयं बँधे थे और स्वयम्, हम अपने बन्धन तोड़ चले!
हम दीवानों की क्या हस्ती? हैं आज यहाँ कल वहाँ चले!

**
*

झूठे जगकी प्रीति

झूठे जगकी झूठी प्रीति ॥
नैन हैं सूने मोहन आ जा,
मन मन्दिरमें जोत जगा जा,
निर्भागेको दरस दिखा जा,
दुनिया कपटिन किसकी मीत—झूठे जगकी झूठी प्रीति ॥
कलजुग बीता करजुग आया,
हर वस्तूने पलटी काया,

हिरदय हिरदय पाप समाया,

अुलटी नगरी अुलटी रीति—झूठे जगकी झूठी प्रीति ॥

दुनिया सावन रैनका सपना,
मोह नगरमें चैनका सपना,
रूप अनूप है नैनका सपना,

किसकी हार और किसकी जीत—झूठे जगकी झूठी प्रीति ॥

धोखा है संसारमें धोखा,
नरमें धोखा नारमें धोखा,
प्रेममें धोखा प्यारमें धोखा,

फीकी तानें बे-रस गीत—झूठे जगकी झूठी प्रीति ॥

**
*

सेवा

क्या दुखी, यतीम, क्या बेवा,
सारे संसारकी करो सेवा ।

अिससे अिज़्ज़त भी हाथ आती है,
और दौलत भी हात आती है ।

खिदमते खल्क से न घबराओ,
सबको दिन दिन प्रेम दिखलाओ ।

तुम ज़मानेमें चैन पाओगे,
ज़िन्दगीके मज़े अुठाओगे।
आदिमेंख़ल्क़ जान लेंगे जब,
अच्छा लड़का तुम्हें कहेंगे सब।
दिलमें रखना ख़याल दुखियोंका,
करते रहना हर अेककी सेवा।
ख़ल्क़की ख़िदमतें जो करता है,
अुसका दमाअिक ज़माना भरता है।
कोने कोनेमें सारे आलममें,
बजते हैं अुसके नामके डंके।
ख़ुश बहुत रहता है ख़ुदा अुससे,
दूर करता है दर्द दुख अुसके।
सब समझते हैं नेक ज़ात अुसे,
सरको अुसके क़दमपे हैं रखते।
कामका कुछ अिवज़ न तुम लेना,
बल्कि अपनाही माल दे देना।
अिससे मिल जायगी तुम्हें जन्नत,
हाथ आयेगी अिक बड़ी राहत।
दिलसे ख़िदमत करेगा जो 'क़ुदसी',
होगा मख़दूम अेक रोज़ वही।

मीरके शेर

बारे दुनियामें रहो ग़मज़दा या शाद रहो ।
अैसा कुछ करके चलो याँ कि बहुत याद रहो ॥

*　　*　　*

अै शोरे क़यामत हम सोते ही न रह जायँ ।
अिस राहसे निकले तो हम को भी जगा लेना ॥

*　　*　　*

बेख़ुदी ले गयी कहाँ हमको ।
देरसे अिन्तज़ार है अपना ॥
जिसको तुम आसमान कहते हो ।
सो दिलोंका गुबार है अपना ॥

*　　*　　*

देखा हो कुछ अिस आमदो शुदमें तो मैं कहूँ ।
ख़ुद गुम हुआ तो बातकी तह आप पा गया ॥

*　　*　　*

हर जिंसके ख़्वाहाँ मिले बाज़ारे जहाँमें ।
लेकिन न मिला कोअी ख़रीदारे मुहब्बत ॥
अिस राज़को रख जी ही में तो जी बचे तेरा ।
ज़िनहार जो करता हो तो अिज़हारे मुहब्बत ॥

*　　*　　*

बज़ममें मुँह अुधर करें क्योंकर ।
और नीची नज़र करें क्योंकर ॥

यों भी मुश्किल है वों भी मुश्किल है।
सर झुकाये गुज़र करें क्यों कर ॥

* * *

यही जाना कि कुछ न जाना हाय।
सो भी अिक अुम्रमें हुआ मालूम ॥

* * *

कहता है कौन 'मीर' कि बेअिख़्तयार रो।
अैसा तू रो कि रोने पै तेरी हँसी न हो ॥

* * *

मौसिमे अब्र हो सुबू भी हो।
गुल हो गुलशन हो और तू भी हो ॥
हो जो तेरा सा रंग गुलका हो।
रीझें हम तब जब वैसी बू भी हो ॥

* * *

यारोंकी आहोज़ारी होवे क़बूल क्योंकर।
अुनकी ज़बाँमें कुछ है दिलमें है कुछ, दुआ कुछ ॥

* * *

दिल जाने है जूँ रोकर शबनमने कहा गुलसे।
अब हम तो चले याँसे रह तू जो रहा चाहे ॥

* * *

गुलिस्ताँके हैं दोनों पल्ले भरे।
बहार अिस तरफ़ अुस तरफ़ अब्र है ॥

* * *

हाथ रखे हाथपर बैठे हो क्या बेख़बर।
चलनेको है कारवाँ कुछ तो किया चाहिये॥

**
*

क्यों ?

दुखी हैं तो क्यों आप झुँझला रहे हैं,
किये़का ही तो अपने फल पा रहे हैं।
कभी अुनके कामोंपे भी मन लगाते,
जो अगलोंके गुन रात दिन गा रहे हैं।
जो अुलटी समझ है तो है काम अुलटा,
कि वह सीधी बातोंको अुलझा रहे हैं।
नयी अुलझनें और पड़ती हैं आकर,
यह क्या गुत्थियाँ आप सुलझा रहे हैं।
किधर जा रहे हैं, नहीं अिसकी सुधबुध,
जो हैं अपनी धुनमें, चले जा रहे हैं।
नहीं खेल लड़कोंका कुछ देस भगती,
यही कबसे हम तुमको समझा रहे हैं।
जो हो प्यार आपसमें तो भाग जागें,
तुम्हें बात यह गुरकी बतला रहे हैं।
नहीं साँचको आँच, भूलो न अिसको,
वह पछतायेंगे, अब जो अितरा रहे हैं।

वही बात है साथ ले डूबनेकी,
जो बहके हुअे हैं वह बहका रहे हैं।
है अेक आपका और अुसका विधाता
हरीजनसे क्यों आप कतरा रहे हैं।
यह क्या अुलटी गंगा बहानेकी सूझी,
कि भाअीसे भाअी छुटे जा रहे हैं।
न आना कभी अुनकी बातोंमें देखो,
जो अनबन यहाँ हममें फैला रहे हैं।
कड़ा जीको रखना कि विपदाके बादल,
जहाँ जायँ हम सरपे मँडला रहे हैं।
न जाने यह चक्कर कहाँ जाके ठहरे,
अभीसे यह क्यों आप घबरा रहे हैं।
सुनी अनसुनी कर दें क्या अिससे हमको,
जो कहना है 'कैफ़ी' कहे जा रहे हैं।

***

नया संगत

यहाँ मनकी कहनेमें साँसा नहीं है,
सब अपने हैं कोअी पराया नहीं है।
तुम्हें धुन है अीश्वरकी, माना, तो फिर क्या,
ये संसार अीश्वरकी माया नहीं है?

है ये देश भक्ती ही अीश्वरकी भक्ती,
जगतका वही क्या विधाता नहीं है ?
तुम्हारे बहाये नहीं बहती गंगा,
तुम्हारे सहारे हिमालय नहीं है।
नहीं कर्मसे छूट मिलती किसीको,
तो फिर ये जगत भी तो मिथ्या नहीं है।
वो कब पहुँचे अुस तक जो ये कह रहे हैं,
कि अैसा है वह और अैसा नहीं है।
जो हो मनकी आँखें तो हों अुसके दर्शन,
किसीने अिन आँखोंसे देखा नहीं है।
अुसीकी दयासे बने काम अपना,
हमें दूसरेका सहारा नहीं है।
वह पापी है जो धर्मसे हिचकिचाये,
बचन क्या यही कृष्णजीका नहीं है।
नहीं धर्म क्या देसकी अपने सेवा,
अिधर ध्यान फिर क्यों तुम्हारा नहीं है।
तुम्हीं देखो क्या करवटें ले रहे हो,
है कुछ ज्ञान संसारका, या नहीं है।
बनी है जो गत देसकी देखते हो,
जतन क्या कोअी तुमको करना नहीं है।

बने काम क्योंकर कि सारे यहाँ तो,
हैं कहनेको अिक करनेवाला नहीं है।
बुरा है, बुरा जो कहे भाअियोंको,
ये प्रेम और हितकी तो भाषा नहीं है।
सुभाव अितना कड़वा न होगा किसीका,
कि लड़नेसे छुटे कोअी धन्धा नहीं है।
हर अिक धर्ममें हैं भलाअीकी बातें,
बुराअी कोअी भी सिखाता नहीं है।
अुजागर करो गुन जो हैं तुममें अच्छे,
बुरा है वही तो जो अच्छा नहीं है।
नहीं है किसे चाह सुख भोगनेकी,
यहाँ कौन-सा है जो दुखिया नहीं है।
लहू पानी अेक कर दो तब घर बनेगा,
ये गुड़ियाका कोअी घरौंदा नहीं है।
बनो अुसके कहते हो जिसको तुम अपना,
सब अपनेको हैं कोअी अपना नहीं है।
जो है जीत मनसे तो है हार मनसे,
जो मन हार दे वो तो जीता नहीं है।
निकम्मा अकारथ है जीवन तुम्हारा,
जो वो देशके काम आता नहीं है।

है मिल बैठना भी भला, पर जो पूछो,
वो मिलना भी क्या, मन जो मिलता नहीं है।
है सौ बातकी अेक बात अिसको सुन लो,
है सब कुछ तो, पर हममें अेका नहीं है।
अुठो और बिछड़े हुओंको मिला दो,
कि बढ़कर कोअी अिससे सेवा नहीं है।
लगन 'राष्ट्रकी' रक्खो, यह राग छोड़ो,
है कोअी कि याँ 'राष्ट्रभाषा' नहीं है।
न थी अेक क्या कौरों पांडोंकी भाषा,
कुरूछेत्र क्या तुमने देखा नहीं है।
दो भाषी थे क्या जो लड़े करबलामें,
कभी क्या जग अितिहास जाँचा नहीं है।
बने कर्म रेखा अपनी बोली लिपी क्यों,
जो सुलझे हों मन कुछ भी झगड़ा नहीं है।
जो 'कलचर सभा' अब बनाअी गयी है।
कोअी काममें अुसके दुविधा नहीं है।
हैं हिन्दू भी अिसमें मुसलमाँ भी अिसमें,
कोअी दूसरा संगम अैसा नहीं है।
मिलो और करो काम सब अिसमें मिलकर,
कोअी और काम अिससे अच्छा नहीं है।

जो कहता है 'कैफ़ी' अिसे सोचो समझो,

वह अच्छा नहीं है, तो अच्छा नहीं है।

**
*

जंगलके राजा !

जंगलके राजा, सावधान !
ओ मेरे राजा, सावधान !

कुछ अशुभ शकुन हो रहे आज।

जो दूर शब्द सुन पड़ता है,
वह मेरे जीमें गड़ता है,

रे अिस हलचलपर पड़े गाज।

ये यात्री या कि किसान नहीं,
अुनकी-सी अिनकी बान नहीं,

चुपके चुपके यह बोल रहे।

यात्री होते तो गाते तो,
आगी थोड़ी सुलगाते तो,

ये तो कुछ विष-सा घोल रहे।

वे अेक अेक कर बढ़ते हैं,
लो सब झाड़ोंपर चढ़ते हैं,

राजा ! झाड़ोंपर है मचान।

जंगलके राजा सावधान !
ओ मेरे राजा, सावधान !
राजा, गुस्सेमें मत आना,
तुम अुन लोगोंतक मत जाना;
वे सब-के-सब हत्यारे हैं ।
वे दूर बैठकर मारेंगे,
तुमसे कैसे वे हारेंगे,
माना, नख तेज़ तुम्हारे हैं ।
"ये मुझको खाते नहीं कभी,
फिर क्यों मारेंगे मुझे अभी ?"
तुम नहीं सोच सकते राजा ।
तुम बहुत वीर हो, भोले हो,
तुम अिसीलिये यह बोले हो,
तुम कहीं सोच सकते राजा !
ये भूखे नहीं पियासे हैं,
वैसे ये अच्छे खासे हैं,
है 'वाह वाह' की प्यास अिन्हें ।
ये शूर कहे जायँगे तब,
और कुछके मन भायेंगे तब,
है चमड़ेकी अभिलाष अिन्हें,

ये जगके सर्व-श्रेष्ठ प्राणी,
अिनके दिमाग, अिनके वाणी,
फिर अनाचार यह मनमाना !
राजा, गुस्सेमें मत आना,
तुम अुन लोगोंतक मत जाना ।

**
*

झीनी झीनी बीनी चदरिया

झीनी झीनी बीनी चदरिया ॥
काहे के ताना, काहे के भरनी,
कौन तारसे बीनी चदरिया ॥
अिंगला पिंगला ताना भरनी,
सुषमन तारसे बीनी चदरिया ॥
आठ कँवल दल चरखा डोले,
पाँच तत्त गुन तीनी चदरिया ॥
साँअीको सियत मास दस लागे,
ठोक ठोकके बीनी चदरिया ॥
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी,
ओढ़ि के मैली कीनि चदरिया ॥
दास 'कबीर' जतन से ओढ़ी,
ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया ॥

**
*

मन मस्त हुआ तब

मन मस्त हुआ तब क्यों बोले ॥

हीरा पायो गाँठ गठियायो । बार बार वाको क्यों खोले ॥१॥
हलकी थी जब चढ़ी तराजू । पूरी भअी तब क्यों तोले ॥२॥
सुरत कलारी भयी मतवारी । मदवा पी गयी बिन तोले ॥३॥
हंसा पाये मान सरोवर । ताल तलैया क्यों डोले ॥४॥
तेरा साहिब है घट माँही । बाहर नैना क्यों खोले ॥५॥
कहे 'कबीर' सुनौ भअी साधो । साहिब मिल गये तिल ओले ॥६॥

**
*

घूँघटका पट खोल

घूँघटका पट खोल रे तोको पीव मिलेंगे ।
घटघटमें वह साँअीं रमता कटुक वचन मत बोले रे ॥
धन जीवनको गरब न कीजे झूठा पचरंग चोल रे ।
सुन्न महलमें दियना बारिले आसनसों मत डोल रे ॥
जोग जुगुतसों रंग-महलमें पिय पायो अनमोल रे ।
कहै 'कबीर' आनन्द भयो है, बाजत अनहद ढोल रे ॥

**
*

सहज समाधि

साधो सहज समाधि भली ॥

गुरु प्रताप जा दिनसे जागी,

दिन दिन अधिक चली ॥१॥

जहँ जहँ डोलौं सो परिकरमा,

जो कुछ करौं सो सेवा।

जब सोवौं तब करौं दंडवत,

पूजौं और न देवा ॥२॥

कहौं सो नाम सुनौं सो सुमिरन,

खावौं पिवौं सो पूजा।

गिरिह उजाड़ अेक सम लेखौं,

भाव मिटावौं दूजा ॥३॥

आँख न मूँदौं कान न रूँधौं,

तनिक कष्ट नहीं धारौं।

खुले नैन पहिचानौं हँसि हँसि,

सुन्दर रूप निहारौं ॥४॥

सबद निरन्तरसे मन लागा,

मलिन वासना त्यागी।

ऊठत बैठत कबहुँ न छूटे,

अैसी तारी लागी ॥५॥

कह 'कबीर' वह अुनमुनि रहनी,
सो परगट करि गाओ ।

दुख सुखसे कोअी परे परमपद,
तेहि पद रहा समाओ ॥६॥

***

दोहे

साधू असा चाहिये जैसा सूप सुभाय ।
सार सारको गहि रखे थोथा देअि अुड़ाय ॥

* * *

यह तो घर है प्रेमका खालाका घर नाहिं ।
सीस अुतारे भुअिं धरे तब पैठे घर माहिं ॥

* * *

प्रेम न बाड़ी अूपजे प्रेम न हाट बिकाय ।
राजा परजा जेहि रुचै सीस देअि ले जाय ॥

* * *

छिनहिं चढ़े छिन अुतरे सो तो प्रेम न होय ।
अघट प्रेम पिंजर बसे प्रेम कहावे सोय ॥

अुठा बगूला प्रेमको तिनका अुड़ा अकास ।
तिनका तिनकासे मिला तिनका तिनके पास ॥

जाको राखे साँइयाँ मारि न सक्के कोय।
बाल न बाँका करि सके जो जग बैरी होय ॥

*   *   *

भूला भूला क्या फिरै सिरपर बँध गयी बेल।
तेरा साँई तुझमें ज्यों तिल माहीं तेल ॥

*   *   *

माला फेरत जुग भया फिरा न मनका फेर।
करका मनका डारिकै मनका मनका फेर ॥

*   *   *

माला तो करमें फिरै जीभ फिरै मुख माहिं।
मनुवाँ तो दस दिसि फिरै यह तो सुमिरन नाहिं ॥

*   *   *

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना मुझ-सा बुरा न कोय।

*   *   *

कबिरा सोई पीर है जो जानै पर पीर।
जो पर पीर न जानई सो काफिर बेपीर ॥

*
**

साधो मनका मान त्यागो

साधो मनका मान त्यागो।
काम क्रोध संगत दुर्जनकी ताते अहनिस भागो ॥
सुख दुख दोनों सम करि जानै और मान अपमाना।
हर्ष शोकते रहै अतीता तिन जग तत्व पिछाना ॥

अस्तुत निन्दा दोऊँ त्यागै खोजे पद निरवाना ।
जन नानक यह खेल कठिन है कोऊ गुरमुख जाना ॥

*
**

काहे रे बन

काहे रे बन खोजन जाऔ ।
सर्व निवासी सदा अलेपा, ताही संग समाऔ ॥

पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है मुकुर मांहिं जस छाऔ ।
तैसे ही हरि बसै निरन्तर घट ही खोजो भाऔ ॥

बाहर भीतर ओकै जानो यह गुरु ज्ञान बताऔ ।
जन नानक बिन आपा चीन्हे, मिटे न भ्रमकी काऔ ॥

*
**

तू दयालु

तू दयालु, दीन हौं, तू दानी, हौं भिकारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज-हारी ॥

नाथ तू अनाथको, अनाथ कौन मो सो ।
मो समान आरत नहिं, आरत हर तो सो ॥

ब्रह्म तू हौं जीव, तू ठाकुर हौं चेरो ।
तात मात गुरु सखा, तू सब विधि हितु मेरो ॥

तोहिं मोहिं नाते अनेक, मानियै जो भावै ।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु, चरन-सरन पावै ॥

*
**

बरसा वर्णन

घन घमंड नभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपन मन मोरा ॥
दामिनि दमकि रहनी घन माहीं ! खलकै प्रीति जथा थिर नाहीं ॥
बरसहिं जलद भूमि नियराये । जथा नवहिं बुध विद्या पायै ॥
बुंद अघात सहहिं गिरि कैसे । खलकै बचन संत सहैं जैसे ॥
छुद्र नदी भरि चली तोराअी । जस थोरेहु धन खल अितराअी ॥
भूमि परत मी ढाबर पानी । जिमि जीवहिं माया लपटानी ॥
सिमिटि सीमिटि जल भरहि तलावा । जिमि सदगुण सज्जन पहि आवा ।
सरिता जल जलनिधि महुँ जाअी । होहि अचल जिमि जिव हरि पाअी ॥

दो.—हरित भूमि तृण संकुल, समुझि परहिं नहिं पंथ ।
जिमि पाखंड विवाद तें, गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥

दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाअी । बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाअी ॥
नव पल्लव भये विटप अनेका । साधक मन जस मिलै विवेका ॥
आक जवास पात बिनु भयेअू । जस सुराज खल अुद्यम गयेअू ॥
खोजत कतहुँ मिलै नहीं धूरी । करै क्रोध जिमि धर्महि दूरी ॥
सस सम्पन्न सोह महि कैसी । अुपकारी के संपति जैसी ॥
निसि तम घन खद्योत बिराजा । जनु दंभिन कर मिला समाजा ॥

महावृष्टि चलि फूटि किआरी। जिमि सुतंत्र भये बिगरहि नारी ॥
कृषी निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥
देखिअत चक्रवाक खग नाहीं। कलिहि पाअि जिमि धर्म पराहीं ॥
अूसर बरषै तृन नहीं जामा। जिमि हरिजन हिय अुपज न कामा ॥
बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा। प्रजा बाढ़ जिमि पाअि सुराजा ॥
जहँ जहँ रहे पथिक थकि नाना। जिमि अिन्द्रियगन अुपजे ग्याना ॥

दो.—कबहुँ प्रबल चल मारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं।
जिमि कपूतके अूपजे कुल सद्धर्म नसाहिं ॥
कबहुँ दिवसमहुँ निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग।
बिनसै अुपजै ग्यान जिमि, पाअि कुसंग सुसंग ॥

चुनी हुअी चौपाअियाँ

परहित सरिस धरम नहिं भाअी। पर पीड़ा सम नहिं अधमाअी ॥

* * *

सुमति कुमति सबके अुर बसहीं। नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥

* * *

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना। जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥

* * *

धन्य सो भूप नीति जो करअी। धन्य सो द्विज निज धर्म न टरअी ॥

* * *

धन्य घरी सोभि जब सतसंगा। धन्य जन्म हरिभक्त अभंगा ॥

*   *   *

साधु चरित सुभ सरिस कपासू। निरस विसाद गुनमय फल जासू ॥

*   *   *

जो सहि दुख परछिद्र दुरावा। वंदनीय जेहि जग जस पावा ॥

*   *   *

जेहिके जेहिपर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलत न कछु सन्देहू ॥

*   *   *

परहित बस जिनके मन माँहीं। तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

*   *   *

रघुकुल रीति सदा चलि आअी। प्राण जाय वरु वचन न जाअी ॥

मो सम कौन कुटिल

मो सम कौन कुटिल खल कामी।
जिन तनु दियो ताहि बिसरायो, अैसो निमकहरामी ॥
भरि भरि अुदर विषयको धावौं
जैसे सूकर ग्रामी।
हरिजन छाँड़ हरी बिमुखनको,
निसिदिन करत गुलामी ॥१॥

पापी कौन बड़ो है मोतें,
सब पतितनमें नामी ।
सूर पतितको ठौर कहाँ है,
सुनिये श्रीपति स्वामी ॥२॥

सबसे ॲूची....

सबसे ॲूची प्रेम सगाओी ।
दुर्योधनको मेवा त्यागो साग विदुर घर पाओी ॥
जूठे फल सबरीके खाये बहुविधि प्रेम लगाओी ॥
प्रेमके वस नृप-सेवा कीन्हीं आप बने हरि नाओी ॥१॥
राजसु यज्ञ युधिष्ठिर कीनो तामें जूठ ॲुठाओी ॥
प्रेमके बस अर्जुन रथ हाँक्यो भूल गये ठकुराओी ॥२॥
ॲैसी प्रीति बढ़ी बृन्दावन गोपिन नाच नचाओी ॥
सूर क्रूर ॲिस लायक नाही कहँ लगि करौं बड़ाओी ॥३॥

रहीमके दोहे

कहु रहीम कैसे निभै बेर-केरको संग ।
वे डोलत रस आपने ॲुनके फाटक अंग ॥

जो रहीम ॲुत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग ।
चंदन विष व्यापक नहीं लिपटे रहत भुजंग ॥

साधु सराहे साधुता जती जोखिता जान ।
रहिमन साँचे सूरको बैरी करत बखान ॥

रहिमन धागा प्रेमका मत तोड़ो चटकाय ।
टूटेसे फिर ना मिले, मिले गाँठ पड़ जाय ॥

प्रीतम-छवि नैनन बसी, पर-छवि कहाँ समाय ।
भरी सराय रहीम लखि, आप पथिक फिर जाय ॥

रहिमन अँसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रगट करेअि ।
जाहि निकारो गेह तें, कस न भेद कहि देअि ॥

रहिमन निज मनकी व्यथा, मन ही राखो गोय ।
सुनि अिठलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय ॥

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं ।
अुनतें पहले वे मुअे, जिन मुख निकसत 'नाहिं' ॥

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून ।
पानी गये न अूबरै, मोती मानुस चून ॥

रहिमन निज सम्पति बिना, कोअु न विपति सहाय ।
बिनु पानी ज्यों जलजको, नहिं रवि सकै बचाय ॥

अेकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय ।
रहिमन सींचे मूलको, फूलै-फलै अघाय ॥

यह न रहीम सराहिये, देन-लेनकी प्रीत ।
प्रानन बाजी राखिये, हार होय कै जीत ॥

पायो जी मैंने

पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो ।

वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो ॥१॥

जनम जनमकी पूँजी पाअी, जगमें सभी खोवायो ॥२॥

खरचै न खूटै, वाको चोर न लूटै, दिन दिन बढ़त सवायो ॥३॥

सतकी नाव खेवटिया सतगुरु, भव सागर तर आयो ॥४॥

मीराँके प्रभु गिरिधर नागर, हरख हरख जस गायो ॥५॥

सितारेके शब्दार्थ

ओज

वतन–देश

आह–अुच्छवास

बाट जोहता–रास्ता देखता था, प्रतीक्षा करता था।

आँखें लगी थीं–चाह थीं।

विरक्त–अुदासीन।

अुत्थान–अुन्नति, तरक्की।

व्यस्त–जुटा हुआ, मशगूल।

सिकंदर–अेलेक्ज़ेन्डर महान्।

कोहकन–पहाड़ खोदने वाला यानी फ़रहाद।

क्रीसस–क्राअिस्ट, अीसा मसीह।

मंसूर–अेक सन्त जो अनल हक़ (अहं-ब्रह्मास्मि) कहता था।

सोहराब–अीरानका अेक प्रसिद्ध पहलवान।

पील-तन–हाथीके जैसे शरीरवाला, मोटा।

क्रिश्चियन–अीसाअी।

प्रतिभा–असाधारण बुद्धि।

प्रदान–देना।

दृग–आँख।

बसो हर वक्त तुम दिलमें हमारे

छब–रूप।

तेवर–दृष्टि।

प्यासी नदी

जारी–चलती, बहती।

लहू–खून।

अिज़्ज़ते हिन्दोस्ताँ–हिन्दुस्तानकी लाज

अुभरना–पानीसे अूपर आना।

खुश्क–सूखा।

कार आमद–कामके लायक़, अुपयोगी

आबे ज़िन्दगानी–अमृत।

नादानी–मूर्खता।

नासवाब–कृतघ्नता।

आब आब–पानी पानी होना यानी बहुत ही लज्जित होना।

बाज़ूये ज़र–धनकी बाहें यानी धनवानों की बाहें।

नाखुदाअी–नाव खेना।

किश्ती–नाव।

कुर्बानी–बलिदान, त्याग।

सरसे पानी अूँचा होना–समर्थमें न रहना।

सुबहको आमद

मशरिक़–पूरब ।
कार व्योहार–काम-काज ।
रफ्तार–गति, चलना ।
गुफ्तार–बातचीत ।
चहकार–चहचहाना, चिड़ियोंकी आवाज़ ।
अज़ाँ–नमाज़के लिये पुकारनेकी आवाज़ ।
आमद–आना ।
शमा–दीपक ।
अंजुमन–सभा ।
शबनम–ओस ।
कुलेलें–खुशीमें उछलना कूदना ।
जल्वा–ज्योति ।
काहिली–आलस्य ।
मुअज़्ज़िन–अज़ान देनेवाला ।
क़ाफ़िले–यात्रियोंके दल ।
मंज़िल–यात्रियोंके ठहरनेका स्थान ।
मछेरे–मछली पकड़नेवाले ।
दलिद्दर–दरिद्रता, दलिद्दुर, (ग्रामीण)
ख़ैर से–कुशल पूर्वक ।

चूरन

अमल बेद / अमल बेत – अेक लता, जिसको चूरणमें मिलाते हैं ।
पाचक–पचानेवाला ।
पचलोना–पाँच नमकोंवाला ।
अमले–अधिकारी, अफ़सर ।
अकिल अजीरन–बुद्धिकी बड़ी बड़ी बातें करना ।

श्री कृष्णकी बाल लीला

मधुपुरी–मथुरा नगरी ।
ज़ाहिरमें–प्रकटमें ।
जोति-सरुप–ज्योतिःस्वरूप ।
बजा–उचित, क़ायम ।

होली

जी की गाँठ–मनकी कटुता ।

कर्मवीर

बातें बनाना–बहानेबाज़ी करना ।

क़ौमका हमदर्द

नूअ‌इन्साँ–मनुष्य जाति ।
अितलाक़–लागू होना, अपना ।
तर्जीह–बढ़कर समझना ।
ज़रद–हानि, तकलीफ़ ।
हाले बद–दुर्दशा ।
अज़ीज़–प्रिय ।
राहते जाँ–प्राणोंके लिये आराम ।

नौरोज़—अेक त्योहार ।
मायये ग़म—अधिक दुःख ।
सोग—शोक ।
मातम—शोक मनाना ।
जलील—प्रताप युक्त ।
ज़लील—निम्न, नीचा ।
गर्दिशे अफ़लाक—आकाशके चक्करका असर यानी दुःख
आसायश—आराम, चैन ।
ख़ाक—मिट्टी ।
ख़ाक डालना—तिरस्कार करना ।
हम वतन—देशवासी ।
अहले वतन—देशवालोंके ।
ख़ैर—कुशल ।
ब्रह्मू—ब्रह्म समाजी, राजा राम मोहन रायके मतको माननेवाला ।
आँखोंकी पुतलियाँ—बहुत ही प्रिय ।

मेहनत

खपाते हैं—बिताते हैं, मिटाते हैं ।
ताक़तवाँ—शक्ति और सामर्थ्य ।
जिस्म—शरीर ।
अिबादत—ओीश्वर प्रार्थना ।
शहादत—नेक काममें जान देना ।

अपना अपना सहारा

बशर—मनुष्य
आरजी—अस्थायी, थोड़े समयके लिये
आड़े वक्त—दुःखके समय ।

रुबाओी

ता ब मक़दूर—यथा सम्भव, जहाँतक हो सके ।
बारे—अकबार, अेक ।
मक़बूल—प्रिय ।
अिरशाद—आज्ञा ।

हमारा झंडा

इठलाते—मस्तीके साथ अैंठते हुये ।
लश्कर—सैन्य ।

मेरे वतनको तूने जन्नत बना दिया है

शुक्र—कृतज्ञता ।
जन्नत—स्वर्ग ।
अता—देन ।
हम दोश आस्माँ—आसमानकी बराबर ।
राहत—आराम, चैन ।

ख़ाके हिन्द

अज़मत—महानता ।
गुमाँ—सन्देह, ख़्याल ।
फ़ैज़े क़ुदरत—ईश्वरी देन ।
रवाँ—प्रवाहित ।
जबीं—ललाट ।
हुस्ने अज़ल—शाश्वत सौन्दर्य ।
अयाँ—प्रगट, स्पष्ट ।
ज़ेबोज़ीनत—शोभा शृंगार ।
औज—उच्चता ।
अिज़्ज़ोशाँ—गौरव बड़प्पन ।
ख़ुरशीद पुर ज़िया—चमकता हुआ सूर्य ।
वादिये कोहन—पुरानी बस्ती ।
सरमद—अेक संत
सदक़ा—न्योछावर
जाम—प्याला ।
अुल्फ़त—प्रेम ।
बख़्शा—प्रदान किया ।
अंजुमन—सभा ।
राना—राणा प्रताप ।
निहाँ—छिपे हुये ।
शौकत—गौरव ।
ताऊस—मोर ।
जूये शीर—दूध
नूर—ज्योति ।
सहेर—सुबह ।
रश्क—अीर्षा ।
महृ—सूरज ।
बर्ग—पत्ता ।
गर्दोगुबार—धूल मिट्टी ।
ख़िलअत—मूल्यवान वस्त्र ।

क़ौमकी लड़कियोंसे

रविश—चाल चलन ।
ख़ाम—कच्चा, टेढ़ा ।
दाग़—धब्बा ।
नुमाअिश—प्रदर्शनी ।
रिफ़ार्म (अँग्रेज़ी)—सुधार ।
बूये वफ़ा—प्रेम-गन्ध ।
ग़ैरते क़ौमी—जातीय गौरव ।
ख़ुद परस्ती—स्वार्थ परता ।
लक़ब—अुपाधि ।
अख़लाक़—नैतिकता, आचरण ।
अीमान—विश्वास ।
नक़्श—चिन्ह ।
ज़िल्लत—अपमान ।
रुख़—चेहरा, मुँह ।
क़ारूँ—अेक पौराणिक व्यक्तित्व, जिसको सबसे बड़ा धनवान समझा गया है ।

वफ़ा—प्रेम।
परस्तिश—पूजा।
तफ़रीह—मनोरंजन।
मरकज़—केन्द्र।
मासूम—अबोध, पाप रहित।
मकतब—पाठशाला।
जानूँ—जंघा।
नग़मा—गीत।
नग़मये क़ौम—राष्ट्रीय गीत।
परवरिश—पालन पोषण।
शफ़ीक़—स्नेही।
तासीर—प्रभाव।
फ़साना—कहानी।

वतन

अंजुमन—संस्था, सभा।
अुल्फ़त—प्रेम।
आलम—दशा, अवस्था।

मज़दूर

ज़र—धन।
जाह—अिज़्ज़त, प्रतिष्ठा।
हशम—वैभव।
लाल—अेक क़ीमती पत्थर।
गौहर—मोती।

अलम—झंडा।
शोरिश—दंगा, हलचली।
हश्रबपा होना—कुहराम मचना।
गुलज़ार—वाटिका।
मुसर्रत—आनंद, ख़ुशी।
अंजाम—अंत, परिणाम।

रोटीके मतवाले

साक़ी—शराब पिलानेवाला।

ख़ूब बरस लो

जलधर—बादल।
कौन नये अंकुर अुपजाते—भावार्थ—कौनसी आशा पैदा होने वाली है।

जय बोलो भारत माताकी

अश्क—आँसू।
दामन—पल्ला, आँचल।
मातम—शोक मनाना।
शाह—बादशाह।
रंग जमाना—प्रभाव जमाना।
ख़ाक छानना—बहुत तलाश करना।
ख़म—झुकना, टेढ़ा।

झाँसीकी रानी

भृकुटी—तेवर, भौं।
फिरंगी—अँग्रेज़।

खिलवार–खेल ।
आराध्य–पूज्य ।
मुदित–खुश ।
बेज़ार–दुखित ।
सरे आम–खुल्लम खुल्ला ।
आहत–घायल, चोट खाया हुआ ।
जुर्म–अपराध ।
क़ुर्बानी–बलिदान ।
असमान–जो समान न हो ।
मुँहकी खाना–बे अिज़्ज़त होना, हारना ।
कृतज्ञ–अहसानमंद ।

बरखा

तौर–ढंग ।
दुहाओी फिरना–ज़ोर शोर होना, डंका बजना ।
खुदाओी फिरना–लोगोंका खिलाफ़ होना ।
अब्र–बादल ।
रिसाले–फ़ौजके दल ।
चर्ख़–आकाश ।
मुहिम–लड़ाओी, फ़ौजकी चढ़ाओी ।
बेड़ा डुबोना–सर्वनाश करना ।
कौंदना–बिजलीका चमकना ।
नक़ाब–घूँघट ।
तह करना–लपेटना ।
ग़ुस्ले सेहत–स्वास्थ्य-स्नान ।
खिलअत–बादशाहों द्वारा किसीको अिनाममें दिये जानेवाले वस्त्र ।
कोह–पहाड़ ।
दश्त–जंगल ।
मामूर–भरा हुआ ।
बटिया–बाट, राह ।
नमूदार–दिखाओी पड़ना ।
रहवार–तेज़ चलनेवाला घोड़ा ।
संग–पत्थर ।
शजर–पेड़ ।
वर्दी–पोशाक ।
लाजवर्दी–नीले रंगकी ।
पटे होना–भरे होना ।
कुहसार–पहाड़ ।
अशजार–'शजर' का बहुवचन ।
सू–तरफ़ ।
ता–जिससे ।
जमादात–पत्थर जैसी चीज़ें ।
सिसकना–चुपके चुपके रोना ।
मख़फी–छिपी हुओी ।
अुगलना–बाहर निकालना ।
अम्बार–अूँचे ढेर ।

बीर बहोटी—मखमल जैसा अेक लाल रंगका कीड़ा जो बरसातके दिनोंमें दिखाअी देता है।
गुलनार—फूलोंसे भरा हुआ।
औसाँ—होश-हवास।
बेड़ा—नावों या जहाज़ोंका झुंड।
रौ—प्रवाह, बहाव।

ख़ुसरोकी पहेलियाँ

वाके—अुसके।
वाकी—अुसकी।
रहवत—रहता है।
वाने—अुसने।
वासे—अुससे।
निकसत—निकलते हैं।

हालीके शेर

तसव्वुर—ध्यान, ख़याल।
लगाव—प्रेम।
लाग—साधारण सम्बंध, ममता।
अुल्फ़त—प्रेम।
तर्क—त्याग।
शमा—मोमबत्ती, दीपक।
बर्क़—बिजली।
आलम सोज़—दुनियाको जला डालने वाली।
परवाना—पतिंगा।
अरमान—अिच्छा, अभिलाषा।
ज़ात—व्यक्तित्व।
बदज़न—बुरा ख़याल होना।
ताअूस—मोर।
ज़िश्त—ख़राब, कुरूप।
पायेज़िश्त—कुरूप पैर।
क़रनुल-शैताँ—सींगवाला शैतान।
यारा—अुपाय।
फिर जाना—विरुद्ध हो जाना।
सिला—बदला, अिनाम।
ममनून—आभारी।
बुत परस्त—मूर्ति-पूजक।
कहीं सिवा—बढ़कर।
मुराद—कामना।
गो—यद्यपि।
हाजत—आवश्यकता।
क़ुसूर—कमी।
रोज़ फ़िज़ूँ—दिन दिन बढ़नेवाला।
बन्दअे ग़रज—स्वार्थका दास, स्वार्थी।
राज़ी—ख़ुश।
रज़ा—मन्शा (ओीश्वरी अिच्छा)।

बन्दगी—ओश्वरोपासना ।
सदाक़त—सच्चाओी ।
नेटिव—आदिवासी ।
बुकरात—यूनान-ग्रीस देशका ओेक दार्शनिक ।
दाना—बुद्धिमान
अफ़आल—कृत्य ।
मुज़िर—हानिकारक ।
अहल—वाले ।
ग़ैरत—लाज, शरम ।
ज़िल्लत—अपमान, बेअिज़्ज़ती ।
मज़मून तराशना—(व्यंग्य) लेख लिखना
फ़लक—आकाश ।
दहर—दुनिया, ज़माना ।

हे मातृभूमि

रज—धूल ।
परमहंस—ओेसा ज्ञानी जिसे अभेद दृष्टि हो गयी हो ।
प्रत्युपकार—अपकारका बदला ।
सुजस वारि—सुयश जल, कीर्तिका पानी ।

सारे जहाँसे अच्छा

ग़ुरबत—परदेश ।
हमसाया—पड़ोसी ।
पासबाँ—चौकीदार ।
रश्के जिनाँ—जिससे स्वर्ग भी ओीर्ष्या करे । बहुत ही सुंदर ।
आबरूदे गंगा—गंगा नदीका प्रवाह ।
कारवाँ—ऊँटवाले यात्रियोंका झुंड ।
दौरे ज़मां—कालचक्र ।
महरम—ओेसा साथी जिससे मनकी बात कही जाती है ।
दर्दे निहाँ—गुप्त पीड़ा ।

क़ौमी गीत

आन—क्षण ।
ख़ार—काँटा ।
शफ़क—उुषा ।
ज़र्रा—अणु, परमाणु ।

नया शिवाला

सनमकदा—मंदिर ।
जदल—लड़ाओी झगड़ा ।
वाअिज़—धर्मोपदेशक ।
दैर—मंदिर ।
हरम—मस्जिद, काबा ।
वाज़—धर्मोपदेश ।
फ़साना—कहानी ।
ग़ैरीयत—परायापन ।

नक़शे दुओी—द्वैत-चिह्न।
दामान—दामनका बहुवचन।
मय—शराब।
पीत—प्रीति

कुछ शेर

तहज़ीब—संस्कृति।
आशियाना—घोंसला।
अज़ल—आदि, मूल।
सख़ुन—काव्य, बोल, वचन।
चटक—कलीके खिलते समय होनेवाली आवाज़।
कसक—पीड़ा।
कसरत—बहुत।
वहदत—अकत्व।
राज़—रहस्य।
नादाँ—बेसमझ, नादान।

स्वयमागत

स्वयमागत—ख़ुद-ब-ख़ुद आया हुआ।
दैन्य—दीनता।
दूषण—दोष, बुराअियाँ।
विभूषण—गहना।
पूषण—सूरज।
आकर्षण—खिंचाव।

घन—अधिक।
संघर्षण—रगड़ झगड़, स्पर्धा।
दुर्धर—प्रबल।
विभव—अैश्वर्य।

हिन्दु-मुसलमाँ

आनबान—सजधज, शोभा।
मिसरा—अुर्दू कविताका अेक चरण।

ग़ालिबके शेर

हविस—तृष्णा, चाह।
निशाते कार—कामकी ख़ुशी।
अिशरत—आनंद।
क़तरा—बूँद।
ख़ूगर—आदी।
रौनक—कान्ति।
मआल—परिणाम, अंत।

चरखा गीत

पुतली घर—कारख़ाना, मिल।

खादी गीत

विपन्न—दुखी।
अुत्तप्त—संतप्त, ख़ूब तपा हुआ।
अुसास—अुच्छ्वास।
दग्ध—जला हुआ।

खंग—तलवार ।
संजीवन—जीवनदायी शक्ति ।

मातृभूमिके सैनिक

छोह—ममता ।

बेटीकी बिदा

नेक—ज़रा भी ।
बिरवा—पौधा ।
अनुरागे—प्रेम भरे ।
निपट—अेकदम, बिलकुल ।
रीता—ख़ाली ।

दशहरा

ललाम—सुन्दर ।
खंजन—अेक पक्षी ।
चकवा—अेक पक्षी ।
मग—रास्ता
पत्र—पन्ने, पृष्ठ
अत्र—यहाँ ।
हन्त—हाय, अफ़सोस ।

गिरजाके घंटेकी टन् टन्

पाबंद—नियमित ।
निरभ्र—बिना बादलका, स्वच्छ ।

यह किसका कंकाल

पीब—पीप ।
चिर—बहुत समय ।
प्रतिशोधी—बदला लेनेवाला ।

ज़ौक़के शेर

सफ़ा—पाक ।
रफ़े हस्ती करना—अपनेको मिटाना ।
वस्ल—मिलन ।
दार—फाँसीका तख़्ता ।
तिफ़्ल—बालक ।
कोदन—नादान, स्कूलका
रिन्द—मस्त ।
बशर—मनुष्य ।
शर—दुष्टता, बुराअी ।
अीमानकी कहेंगे—सच कहेंगे ।
ग़फ़लत शआरी—असावधानपना ।
दीं—दीन, धर्म ।
तहोबाला—नीचा अूँचा ।
बेक़रारी—बेचैनी ।
गर्दूं—आकाश ।
ज़ेर—नीचे ।
अलम—दुःख ।

बसन्त

मज़र—दृश्य ।
धानी—धानके रंगकी ।
शै—चीज़ ।
अफ़ज़ा—बढ़ानेवाला ।

हवा चली

बाली—गेहूँ, धानकी बाल ।
शिगूफ़ा—कली ।

हाय नहीं यह देखा जाता

निर्मम—ममता हीन, निर्दय ।
बाना—ढंग, पोशाक ।
घिघियाना—गिड़गिड़ाना ।

अछूतकी आह

द्विज—ब्राह्मण ।
फूल—काँसा (अेक धातु)
अपावन—नापाक, अशुद्ध ।

प्यारा है नाम तेरा

फ़ैज़—दान, अुपकार ।
ख़ालिक़—स्रष्टा, पैदा करनेवाला ।
हैवान—पशु ।

रामकी याद

सिम्त—दिशा, तरफ़ ।
आँखोंकी पुतली—बहुत ही प्रिय ।
हविस—चाह, अिच्छा ।

प्रेम संगीत

हस्ती—अस्तित्व ।
अभिशाप—शाप, बद्दुआ ।
अभिशाप अुठान—शाप देना शुरू करना ।

झूठे जगकी प्रीति

करजुग—पाखंड युग, कलियुग ।

सेवा

दम भरना—भरोसेके साथ बड़ाअी करना ।
अेवज़—बदला ।
मख़दूम—मालिक, स्वामी ।

मीरके शेर

बार—द्वार ।
ग़मज़दा—दुखी, अप्रसन्न ।
शाद—ख़ुश, प्रसन्न ।

शोर—कोलाहल।
बेख़ुदी—बेहोशी।
ग़ुबार—धूल, रंज।
आमदोशुद—आवागमन।
राज़—रहस्य, भेद, मर्म।
जिनहार—कभी।
अज़हार—जाहिर करना।
बज्म—सभा, जलसा।
आहोज़ारी—रोना पीटना।
शबनम—ओस।

क्यों

गुर—भेदकी बात।
कतराना—किसीसे बचनेके लिये रास्ता छोड़कर चलना।

नया संगम

उजागर—प्रसिद्ध।
घरौंदा—मिट्टीका घर।

जंगलके राजा

गाज—बिजली गिरनेकी आवाज़, वज्रपातध्वनि।
गाज पड़ना—आफ़त आना।

झीनी....चदरिया

इंगला, पिंगला, सुषम्ना—योगके अनुसार शरीरकी तीन नाड़ियाँ।

मन मस्त....

सुरत—ध्यान, स्मृति।
कलारी—कलवारी, शराब बेचनेवाली।
ताल—तालाब।
तलैया—छोटा तालाब।
ओझे—ओट, आड़। (तिल ओट पहाड़, कहावतसे सम्बंधित।)

घूँघटका पट खोल

तोको—तुमको।
पीव—मालिक, स्वामी, परमात्मा।
चोल—कुरता, शरीर।
सुन्न—सुना।
दियना—दीपक, बत्ती।
बारि ले—जला ले।
जोग—योग।
जुगुत—युक्ति।

सहज समाधि

जा—जिस।
गिरिह—गृह, घर।

तनिक—ज़रा, थोड़ा ।
तारी लगी—लगन लगी, धुन लगी ।

दोहे

सुभाय—स्वभाव, आदत ।
खाला—मौसी, माँकी बहन ।
मनका मनका फेर—दिलकी माला जप, यानी दिलको ध्यानमें लगा ।
सुमिरन—ध्यान, जप ।
पीर—गुरु, साधु ।
पर पीर—दूसरेका दुःख ।

साधो, मनका मान त्यागो

ताते—असुसे ।
अहनिस—अहर्निश, दिन-रात ।

काहे रे बन

अलेपा—निर्लिप्त ।
मुकुर—आअिना ।
आपा—स्व, आत्मा ।
काअी—वह मैल जो किसी जगह पानी के लगातार जमे रहनेसे पैदा होती है ।

तू दयालु

हौं—म ।
मोसो—मेरे समान ।
आरत—दुखी ।
हितु—हितैषी ।

बरसा वर्णन

दामिनि—बिजली ।
नियराये—नज़दीक आकर ।
नवहिं—झुकते हैं, नम्र बनते हैं ।
तोराअी—बाँध तोड़कर ।
ढाबर—गदला, मिट्टी मिला हुआ ।
हरित—हरा ।
संकुल—ढंकी हुअी ।
बटु—विद्यार्थी ।
बिटप—पेड़ ।
सस—शस्य, धान ।
खद्योत—जुगनू ।
दंभिनकर—दंभियोंका ।
निरवहिं—अनाजके पौधोंके बीचकी घास साफ़ करना ।
ऊसर—मरुभूमि, रेगिस्तान ।
भ्राजा—शोभित होना, सुंदर लगना ।
बिलाहिं—लुप्त होना, लापता होना ।
पतंग—सूर्य ।
बिनसै—नाश होना, बरबाद होना ।

चुनी हुअी चौपाअियाँ

अधमाअी—नीचता ।

मो सम कौन कुटिल

सूकर—सुअर ।

ठौर—जगह, शरण, पनाह ।

रहीमके दोहे

भुजंग—साँप ।

जोगिता—योगी पन ।

गोय—छिपाकर, दबाकर ।

पानी—प्रतिष्ठा, अिज्ज़त ।

अुबरै—बचना, अूपर अुठना, अुद्धार पाना ।

कै—या, तो, कि ।

पायो जी मैंने

अमोलक—अमूल्य, बेशक़ीमती ।

खूटै—ख़तम होती, कम होती ।

खेवटिया—नाविक, खेवनहार ।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा के प्रकाशन

		रु. आ. पा.
१.	हिन्दुस्तानी बालपोथी—१ (नागरी-अुर्दू)	०— ४—०
२.	,, शब्दार्थ—गुजराती, मराठी, असमीया बँगला, पंजाबी, कन्नड़, सिंधी, नेपाली, तेलुगु हरअेकका	०— ०—६
३.	हिन्दुस्तानी बालपोथी—२ (नागरी-अुर्दू)	०—१२—०
४.	,, गुजराती समज	०— २—०
५.	,, मराठी ,,	०— ३—०
६.	,, कन्नड़ ,,	०— ५—०
७.	हिन्दुस्तानी छोटी कहानियाँ (नागरी-अुर्दू)	०— ६—०
८.	फुलवारी (गद्य-पद्य संग्रह) नागरी	०—१२—०
९.	,, ,, अुर्दू	१— ०—०
१०.	हिन्दुस्तानी कहानियाँ-१ नागरी	०— ७—०
११.	,, ,, अुर्दू	०— ७—०
१२.	दो आम (नाटिका) नागरी	०— ६—०
१३.	,, अुर्दू	०— ६—०
१४.	हिन्दुस्तानी कहानियाँ—२ नागरी	०—१४—०
१५.	सितारे (पद्य संग्रह) नागरी	१— ०—०
१६.	,, ,, अुर्दू	१— ८—०
१७.	हिन्दुस्तानीके प्रचारक गांधीजी	०— ४—०
१८.	हिन्दुस्तानीकी नीति	०— १—०
१९.	हिन्दुस्तानी मुहावरा कोश	१— ८—०
२०.	प्राचीन कविता संग्रह	१— ८—०
२१.	व्याकरणके पारिभाषिक शब्द	०— ३—०
२२.	नागरी वर्ण-लिपि-बोध	०— ६—०
२३.	हिन्दुस्तानी प्रचार क्यों ?	०—१२—०
२४.	हिन्दके विधानकी अंग्रेज़ी-हिन्दुस्तानी शब्दावली	२— ०—०
२५.	मंगल प्रभात (मासिक पत्रिका) सालाना चंदा	३— ०—०

छापनेवाला : अ. टा. नाणावटी, हिन्दुस्तानी छापघर, काकावाडी, वर्धा

